दिसम्बर 2022

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

हमें किसी के भी अवगुण नहीं देखने चाहिए। देखने ही हों, तो खुद के देखो न! हमें सौ नेगेटिव में से एक पॉज़िटिव ढूँढकर आनंद में रहने जैसा है।

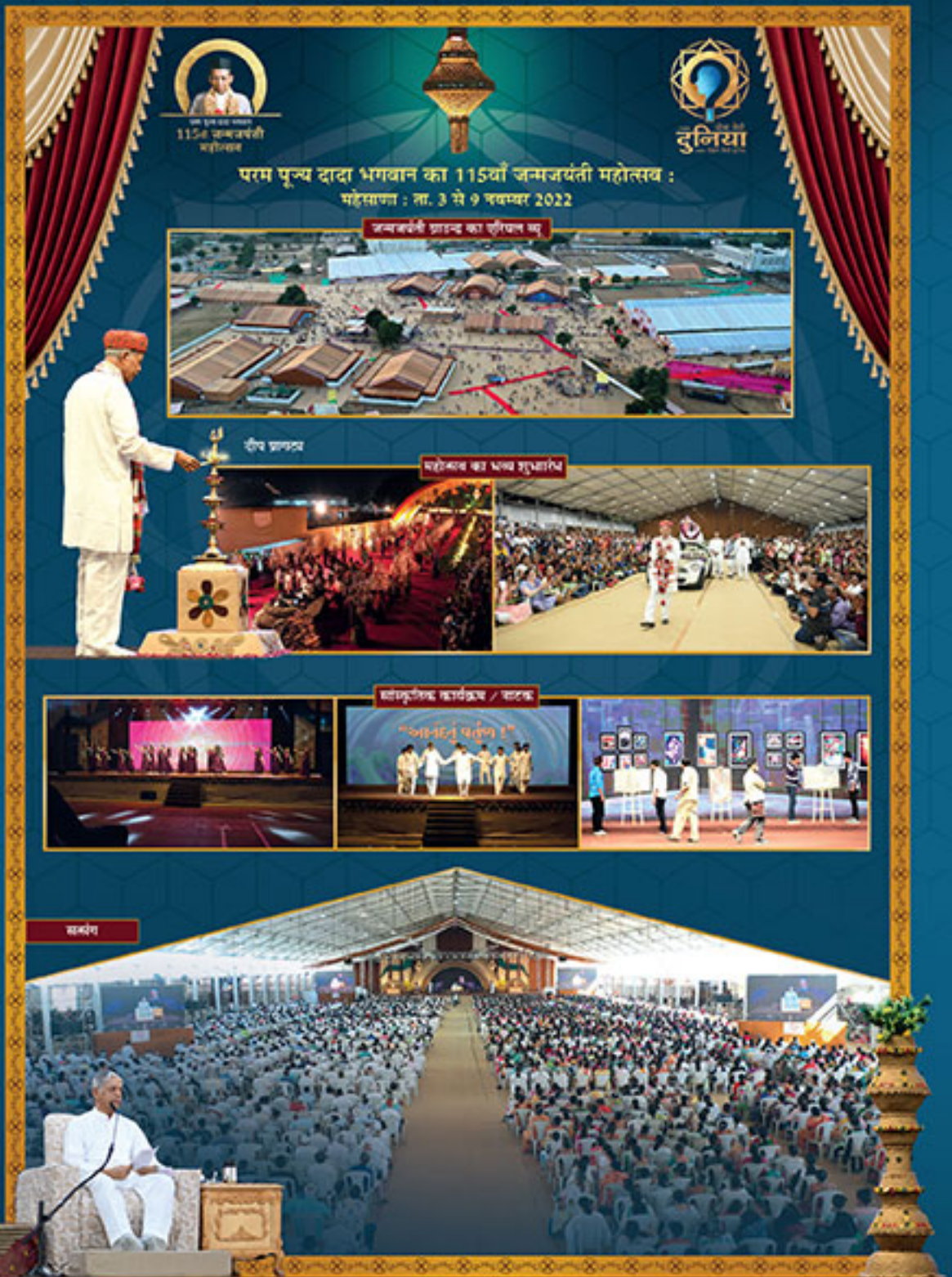
115वाँ जन्मजयंती महोत्सव
दुनिया
परम पूज्य दादा भगवान का 115वाँ जन्मजयंती महोत्सव :
महेसाणा : ता. 3 से 9 नवम्बर 2022
जन्मजयंती ग्राउन्ड का एरियल व्यू
दीप प्रागट्य
महोत्सव का भव्य शुभारंभ
सांस्कृतिक कार्यक्रम / नाटक
सत्संग

वर्ष : 18 अंक : 2
अखंड क्रमांक : 206
दिसम्बर 2022
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2022
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

'पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो' : भाग-1

संपादकीय

अक्रम विज्ञान अर्थात् व्यवहार-निश्चय दोनों के समन्वय वाला 'अद्भूत विज्ञान'। विज्ञान अर्थात् अविरोधाभास, स्वयं क्रियाकारी ज्ञान, सभी जगह से मेल खाए, भीतर से सचेत करे, जबरदस्त आंतरिक परिवर्तन करवाए। ज्ञानी कृपा से हमें निश्चय धर्म तो सहज प्राप्त होता है परंतु उसके साथ सांसारिक व्यवहार की आधि-व्याधि-*उपाधि* में भी निरंतर समाधि के साथ व्यवहारिक धर्म को उच्च ले जाने के लिए जीवन जीने की कला की समझ भी देता है।

प्रस्तुत अंक में, इस साल 2022 में गुरुपूर्णिमा के निमित्त से महात्माओं को पूज्यश्री का संदेश मिला है कि 'पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो'। उसके अनुसंधान में, हम परिस्थितियों और व्यक्तियों के नेगेटिव के सामने हमेशा पॉज़िटिव रह सकें, ऐसे परम पूज्य दादाश्री के सोनेरी आप्तसूत्रों और सूत्रों के लिंक वाली वाणी का इस अंक में यहाँ पर संकलन हुआ है। यदि पॉज़िटिव अहंकार में हो तो खुद सुखी होता है और दूसरों को सुख दे सकता है, जबकि नेगेटिव अहंकार में खुद दुःखी होता है और दूसरों को भी दुःख देता है और तमाम सुख-दुःख से मुक्त होकर आनंद में रहना हो तो आरोपित भाव से मुक्त हो जाओ, बस यह सिद्धांत की बात है। 'पॉज़िटिव देखना है और आनंद में रहना है।' अब, आनंद में कौन नहीं रहने देता? अपनी डिस्चार्ज विपरीत बुद्धि।

परम पूज्यश्री दादाश्री कहते हैं कि अपने महात्मा तो जीते-जागते देव हैं, हमें किसी के अवगुण नहीं देखने चाहिए। देखने हों तो गुण देखना है। हर एक व्यक्ति में शक्ति और कमी अलग-अलग होती है, परंतु उससे कोई भी व्यक्ति बेकार नहीं है, वे क्या कर सकते हैं, वह हमें ढूँढ निकालना है। हमें सौ नेगेटिव में से एक पॉज़िटिव ढूँढकर आनंद में रहने जैसा है। दादाश्री हमेशा ही कहते थे कि मैं किसी की भी बुद्धि को नहीं देखता, मैं तो लोगों की समझ देखता हूँ। सामने वाले के साथ काम लेना सीखो। पुराना तरीका बदलो, सब्स्टिटूट ढूँढो, पॉज़िटिव देखो, उसके साथ आनंद से रहो और सभी को आनंद में रखो। अक्रम विज्ञान अर्थात् नेगेटिव पॉलिसी नहीं, सिर्फ पॉज़िटिव पॉलिसी।

पॉज़िटिव व्यक्ति तो कैसे होते हैं? अगरबत्ती को जलाएँ तो यहाँ पूरे रूम (कमरे) में सुगंध आती है। खुद जलती है लेकिन दूसरों को सुगंध देती है। और हम इस तरह जिएँ तो अपना यह अचिंत्य चिंतामणी ऐसा मनुष्य देह सार्थक हो जाएगा। दादा भगवान से एक मात्र प्रार्थना है कि हम सभी को इतनी शक्तियाँ देना कि जीवन में हमेशा पॉज़िटिव रह सकें और नेगेटिव आए तो जाग्रत होकर वापस लौट सकें। अब जीवन में, 'रियल में शुद्धात्मा दृष्टि और रिलेटिव में पॉज़िटिव दृष्टि' का विकास करना है। पाँच आज्ञा सहित जीवन जीने की कला में इसे शामिल करना है कि 'पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो'। इस सूत्र को व्यवहार में प्रैक्टिकली शामिल करके अक्रम मार्ग में निश्चय-व्यवहार में प्रगति कर पाए और खुद के आत्मा के आनंद का अनुभव होता जाए, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

'पॉज़िटिव देखो, आनंद में रहो' : भाग-1

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

(सूत्र-1)

इस संसार में जो दु:ख हैं वे तो यों ही चले जाए, ऐसे हैं। लेकिन लोग उन्हें आधार देते हैं। 'नेचर' के विरुद्ध चलते हैं, उसके ही सारे दु:ख हैं! 'नेचर' सबकुछ 'एडजस्ट' करती है लेकिन खुद 'नेचर' के विरुद्ध 'अहंकार' करता है!

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा समझाने वाला कोई नहीं मिला।

दादाश्री : जो नहीं जानना है, वह जानता रहता है और जो जानना है उसे नहीं जानते। पैसे हों तो भी दु:ख, न हो तो भी दु:ख, सेठ बन गया तो भी दु:ख और गरीब हो तो भी दु:ख! सभी को दु:ख, दु:ख और दु:ख। उसका क्या कारण होगा?

प्रश्नकर्ता : संसार में बहुत सारे दु:ख हैं, उनका उपाय तो होना चाहिए न?

दादाश्री : ऐसा है न, कि पहले तो दु:ख की परिभाषा होनी चाहिए कि दु:ख किसे कहते हैं? ये लोग परिभाषा के बिना किसी को भी दु:ख कहते हैं। बंगला वाला हो उसके वहाँ भी दु:ख, दो मिल वाले के वहाँ भी दु:ख, संन्यासियों को दु:ख, साधुओं को भी दु:ख, शादीशुदा को भी दु:ख, विधवा को भी दु:ख, सात पतियों वाली को भी दु:ख, तो फिर किसे दु:ख नहीं है? यानी ये जो दु:ख हैं, वे तो सारी गलत मान्यताएँ हैं। ये सभी नासमझी के दु:ख हैं! इस दुनिया में जो दु:ख हैं, वे नासमझी के ही हैं। इसलिए मैं क्या कहता हूँ कि नासमझी निकाल दो और आप समझपूर्वक जीओ तो जगत् में दु:ख है ही नहीं!

अब, वास्तव में उन्हें दु:खी कौन कहेगा? लेकिन वे अपने आप मान बैठे हैं। जब तक वे ऐसा मानते हैं कि मैं ऐसे दु:खी हूँ तब तक दु:ख नहीं जाता। आप अपने आप कहो कि मैं दु:खी हूँ, तब दु:ख क्या कहता है, कि मुझे कौन याद कर रहा है? उसके वहाँ मैं जाऊँगा। मुझे याद करते हैं, उसके वहाँ मुझे जाना पड़ेगा। देखो, हम याद नहीं करते तो हमारे वहाँ दु:ख आता भी नहीं है न!

एक बहन आई थी। वह कहने लगी, 'मेरी शादी हो गई है, लेकिन मुझे वह रास्ता पसंद नहीं है। मुझे धर्म के रास्ते पर ही चलना ज़्यादा अच्छा लगता है।' तब मैंने कहा, 'हाँ, लेकिन वह पसंद नहीं है, ऐसा करने से क्या फ़ायदा?' तब वह बहन कहने लगी, 'पसंद नहीं है, वह तो रहेगा ही, लेकिन भक्ति ज़्यादा करूँगी।' मैंने कहा, 'पसंद नहीं है लेकिन वह तो रहेगा ही, इस बात का तो भरोसा है न?' तब वह बहन कहने लगी, 'हाँ।' मैंने कहा कि जो रहने ही वाला है, उसे 'पसंद नहीं है', ऐसा नहीं बोलना चाहिए। 'मुझे बहुत पसंद है, मेरी शादी हो गई वह।' 'मुझे बहुत पसंद है', ऐसा बोलने में क्या हर्ज़ है? आप जो भी कसौटी से गुज़रते हैं, तब आप कहें

कि 'अरे, इस दुःख में मैं कहाँ फँसा? मैं दुःख में फँस गया।' उससे दुःख बढ़ता है। और आप दुःख में फँस गए हो तब आप कहें कि, 'यहाँ सबकुछ अनुकूल है, अच्छा है।' तो अनुकूल हो जाता है। इसलिए अच्छा बोलना चाहिए।

यह नेचर (कुदरत) आपसे जो-जो एडजस्टमेन्ट करवाती है, उसे आप अच्छा कहोगे तो आपका छुटकारा होगा। वर्ना, आप खराब बोलोगे तो फिर आपका छुटकारा नहीं होगा। अतः आपको अपने मन से ये निकाल देना चाहिए कि मुझे इस संसार में दुःख है या ऐसा-वैसा कुछ है। जो है, अग्नि को छूओगे तो जल जाओगे, बर्फ़ को छूओगे तो ठंडक लगेगी, इस तरह असर होता ही रहेगा। इसमें अग्नि को बदनाम करने से क्या फ़ायदा होगा? बर्फ़ की तारीफ़ करते रहें, उससे हमें कोई फ़ायदा होगा?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : और अग्नि को बदनाम करते रहें तो? उसके बजाय आप झंझट ही छोड़ दो न!

(सूत्र-2)

यह पूरा जगत् दुःखी है, जैसे मछली छटपटाती है उस तरह छटपटा रहे हैं, खुद की मिलें होने के बावजूद भी! इसलिए समझने की ज़रूरत है। जीवन जीने की कला जानने की ज़रूरत है।

पहले तो घर में क्लेश नहीं होना चाहिए और अगर हो जाए तो उसे समेट लेना चाहिए। थोड़ा होने लगे ऐसा हो, हमें लगे कि अभी ज्वाला भभकेगी, उससे पहले ही पानी छिड़क कर ठंडा कर देना। क्लेशयुक्त जीवन जिएँ तो उसका क्या फायदा? क्लेशयुक्त जीवन नहीं होना चाहिए न? क्या बाँटकर ले जाना है? घर में साथ में खाना-पीना है, फिर कलह किस बात की? घर में क्लेश होगा न, तो बच्चों के जीवन पर असर पड़ेगा। कोमल बच्चों पर सब असर होता है। अतः क्लेश जाना चाहिए।

जहाँ क्लेश होता है, वहाँ भगवान का वास नहीं रहता। जहाँ क्लेश नहीं होता, वहाँ भगवान का वास निश्चित है, इसकी मैं आपको 'गारन्टी' देता हूँ। क्लेश हुआ कि भगवान चले जाते हैं।

अपने घर में क्लेश रहित जीवन जीना चाहिए, इतनी कुशलता तो आप में होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : क्लेश होने का मूल कारण क्या है?

दादाश्री : भयंकर अज्ञानता! उसे संसार में जीना नहीं आता। लड़के का बाप होना नहीं आता, पत्नी का पति होना नहीं आता। जीवन जीने की कला ही नहीं आती! ये तो, सुख होने पर भी सुख नहीं भोग सकते। यह पूरा जगत् दुःखी है, जैसे मछली छटपटाती है वैसे छटपटा रहे हैं, खुद की मिलें होने के बावजूद भी! इसलिए समझने की ज़रूरत है।

जीवन जीने की कला जानने की ज़रूरत है। जीवन जीने की कला तो है ही न! सभी के लिए कहीं मोक्ष नहीं है, लेकिन जीवन जीने की कला, वह तो होनी चाहिए न? भले ही मोह करो, लेकिन मोह पर जीवन जीने की कला तो जानो कि किस तरह जीवन जीना है! सुख के लिए भटकते हैं न, तो क्या क्लेश में सुख होता है? क्लेश तो उल्टा सुख में भी दुःख ले आता है। भटकते हैं सुख के लिए और लाते हैं दुःख। जीवन जीने की कला हो तो दुःख नहीं लाता, दुःख हो न तो उसे बाहर निकाल देता है।

प्रश्नकर्ता : किसी भी वस्तु के परिणाम को अच्छी तरह से लेना वह मन की भूमिका नहीं कहलाती?

दादाश्री : पॉज़िटिव लेना, वह मन की भूमिका है। लेकिन फिर भी, ज्ञान होगा तो ही पॉज़िटिव लेगा, वर्ना नेगेटिव ही देखेगा न!

(सूत्र-3)

इस जगत् में हमेशा 'पॉज़िटिव' लो। 'नेगेटिव' की तरफ मत चलना। 'पॉज़िटिव' का उपाय हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम चाहे जितना करें, परंतु सामने वाला नहीं सुधरे तो क्या करें?

दादाश्री : खुद सुधरे नहीं और लोगों को सुधारने गए, उससे लोग बल्कि बिगड़ गए। सुधारने जाएँ कि बिगड़ते हैं। खुद ही बिगड़ा हुआ हो तो क्या होगा? खुद का सुधरना सब से आसान है! हम नहीं सुधरे हों और दूसरों को सुधारने जाएँ, वह 'मीनिंगलेस' (अर्थहीन) है। तब तक अपने शब्द भी वापस आएँगे। आप कहो कि, 'ऐसा मत करना।' तब सामने वाला कहेगा कि, 'जाओ, हम तो ऐसा ही करेंगे!' यह तो सामने वाला बल्कि अधिक उल्टा चला!

अहंकार से सामने वाले को डरा-धमकाकर काम करवाने जाएँ, तो सामने वाला अधिक बिगड़ेगा। इसमें अहंकार की ज़रूरत ही नहीं है। जिसमें अहंकार नहीं है, वहाँ उसके प्रति सभी हमेशा 'सिन्सियर' (ईमानदार) रहते हैं, 'मॉरेलिटी' (नैतिकता) होती है। सच्चा व्यक्ति 'मैं सच्चा हूँ', ऐसा करके सब को बहुत दु:ख देता है। मतलब उसे अहंकार को चोंट पहुँची इसका दु:ख है!

हमारा अहंकार नहीं होना चाहिए। अहंकार सभी को चुभता है। छोटे बच्चे को भी ज़रा 'बेअक्ल, मूर्ख, गधा', यदि ऐसा कहा तो वह भी टेढ़ा चलता है और 'बेटा, तू बहुत सयाना है', कहें कि तुरंत वह मान जाता है।

प्रश्नकर्ता : और उसे बहुत सयाना कहें तो भी वह बिगड़ जाएगा?

दादाश्री : 'मूर्ख' कहें तो भी बिगड़ जाएगा और 'बहुत सयाना' (ऐसा अत्याधिक) कहें तो भी बिगड़ जाएगा। क्योंकि 'सयाना' कहोगे तो उसके अहंकार को 'एन्करेजमेन्ट' (प्रोत्साहन) मिल जाएगा और 'मूर्ख' कहोगे तो 'साइकोलोजिकल इफेक्ट' (मानसिक असर) उल्टा पड़ेगा। अक़्लमंद इंसान को 25-50 बार 'मूर्ख' कहोगे तो उसके मन में वहम हो जाएगा कि, 'वास्तव में क्या मैं पागल हूँ?' ऐसा करते-करते वह पागल हो जाएगा। इसलिए, मैं पागल को भी 'तेरे जैसा समझदार इस जगत् में कोई नहीं' ऐसा कर-करके 'एन्करेजमेन्ट' देता हूँ। इस जगत् में हमेशा 'पॉज़िटिव' लो। 'नेगेटिव' की तरफ मत चलना। 'पॉज़िटिव' का उपाय हो जाएगा। मैं आपको 'सयाना' कहूँ और यदि आवश्यकता से अधिक आपका अहंकार खिसका, तो मुझे आपको चपत मारना भी आता है, नहीं तो वह उल्टे रास्ते चलेगा, और उसे 'एन्करेज' (प्रोत्साहित) नहीं करें तो वह आगे बढ़ेगा भी नहीं।

'अहंकार नुकसानदायक है' ऐसा जान लो, तब से सारा काम सरल हो जाएगा। अहंकार का रक्षण करने जैसा नहीं है। अहंकार खुद ही रक्षण कर ले, ऐसा है। यदि अहंकार नहीं होता तो दुनिया ऐसी पागल नहीं होती। अहंकार की वजह से दु:ख हैं। काम करते रहो उसमें हर्ज नहीं है लेकिन यह अहंकार बिना वजह तूफान खड़े करता है।

(सूत्र-4)

किसी को किंचित्मात्र दुःख न हो, ऐसा अहंकार होना चाहिए वह 'पॉज़िटिव' अहंकार है।

खुद का थोड़ा सा भी अपमान हो गया हो तो मन में बैर रखता है और जाकर पुलिस वाले से कह आता है, कि 'उसने घर में तेल के डिब्बे जमा करके रखे हैं।' अरे, तेरा बैर है, इसलिए ऐसा किया? उसे किसलिए पुलिस में पकड़वाया? बैर का बदला लेने के लिए! यह नेगेटिव अहंकार।

नेगेटिव अहंकार बहुत बुरा अहंकार कहलाता है। किसी को जेल में डलवाने फिरता है, तभी से खुद के लिए जेल खड़ी हो गई! अपने को कैसा होना चाहिए कि निमित्त तो, जो भी आए उसे जमा कर लेना चाहिए, क्योंकि अपनी पिछली भूलें हैं, इसीलिए हमें कोई गालियाँ दे तो हमें जमा कर लेनी चाहिए। जमा करने के बाद फिर से उसके साथ व्यापार मत करना। यदि तुझे सामने वाले की गाली पुसाती हो तो व्यापार जारी रखना और सामने दूसरी दो दे देना, लेकिन यदि सामने वाले की गाली नहीं पुसाती हो तो तुझे उसके साथ व्यापार बंद कर देना चाहिए।

व्यवहार इस प्रकार बदलो, कि हमें देकर लेना है। यानी, वापस देने आए उस घड़ी यदि पुसाता हो तब देना।

आपको लगता है कि 'आओ साहब, आओ साहब' कहने से उसके प्रति स्पंदन अच्छे पड़ेंगे तो वैसा करना। 'आप्तवाणी-1' में लिखा है, उसी तरह बावड़ी में बोलना चाहिए। बावड़ी में जाकर कहना कि, 'तू चोर है' तो वह वापस कहेगी कि, 'तू चोर है।' और यदि तुझे ऐसा पसंद नहीं हो तो तू बोलना कि, 'तू राजा है, तू राजा है।' तो वह भी बोलेगी कि, 'तू राजा है, तू राजा है।' ऐसी यह दुनिया है! आप बावड़ी में जाकर कहें कि, 'तू चौदह लोक का नाथ है', तो वह भी आपसे कहेगी कि, 'तू चौदह लोक का नाथ है।' इसलिए इसमें आपको जैसा पसंद है, वैसा बोलना चाहिए। ऐसा 'प्रोजेक्ट' करो कि आपको पसंद आए। यह सारा आपका ही प्रोजेक्शन है। इसमें भगवान ने कोई दख़ल नहीं की है।

दुनिया में किसी को 'बेअक्ल' मत कहना। अक्ल वाला ही कहना। तू समझदार है, ऐसा ही कहोगे तब आपका काम होगा। एक आदमी उसकी भैंस से कहता था कि 'तू बहुत समझदार है बा, बहुत अक्ल वाली है, समझदार है।' मैंने उससे पूछा, 'भैंस को तू ऐसा क्यों कहता है?' तब उसने कहा कि, 'ऐसा नहीं कहूँ तो भैंस तो दूध देना ही बंद कर दे।' भैंस यदि इतना समझती है तो क्या मनुष्य नहीं समझेंगे?

शोर्ट कट में कहना हो तो यदि सांसारिक सुख चाहिए तो इस इगोइज़म का पॉज़िटिव उपयोग कर, इसमें नेगेटिव मत डालना और तुझे दुःख ही चाहिए तो नेगेटिव अहंकार रखना और सुख-दुःख मिक्सचर चाहिए तो दोनों इकट्ठे कर! और यदि तुझे मोक्ष में ही जाना है तो आरोपित भाव से मुक्त हो जा, स्वभाव-भाव में आ जा!

इन तीन वाक्यों पर पूरा वर्ल्ड चल रहा है। ये तीन वाक्य समझ लें और उनके अनुसार करना शुरू कर दें तो सभी धर्म उसमें आ गए!

(सूत्र-5)

संसार में पॉज़िटिव विचारों को आने दो तो नेगेटिव का आना रहा ही नहीं। वह भी बहुत उत्तम कहा जाएगा। ऐसे छाँट-छाँटकर काम करो न, तो भी बहु उत्तम है।

अब अच्छे विचार यानी क्या? पॉज़िटिव विचार। किसी को दुःख न हो, ऐसा विचार आना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : बहन कहती है कि हमेशा सामने से ही नेगेटिव अप्रोच होती है, वहाँ हमें पॉज़िटिव कैसे रहना है? सामने वाला अपने साथ नेगेटिव ही हो, वह नेगेटिव चार्ज हो तो उसे हमें पॉज़िटिव चार्ज कैसे करना है?

दादाश्री : आपको तो ऐसा तय करना है कि हमें इसे आग नहीं देनी है। तो चाहे कितना भी खराब पटाका हो तब भी वह नहीं फूटेगा। और शायद कोई जला गया हो तो फूट जाएगा, वह अलग चीज़ है। लेकिन हमें नहीं जलाना है ऐसा तय करें तो फिर हो जाएगा। आपको एडजस्ट होना चाहिए। शादी की तो यह इतने सालों का कॉन्ट्रैक्ट (अनुबंध) है न? कॉन्ट्रैक्ट नहीं है? वह क्या हज़ार सालों का है? पाँच-पचास साल, जितने जिए उतने सालों का कॉन्ट्रैक्ट। वह कॉन्ट्रैक्ट आपको पूरा करना चाहिए।

विचार ज़रा खराब आ रहे हों न, उन्हें मिटा दो और नये अच्छे विचारों को उत्पन्न करो। अब अच्छे विचार यानी क्या? पॉज़िटिव विचार। किसी को दुःख न हो, ऐसा विचार आना चाहिए। अच्छे विचार, पॉज़िटिव विचार खास तौर पर आने देना। अच्छा युग आ रहा है। उसका लाभ उठाओ। विचार पर आधारित है। खराब विचार आए न, तो नेगेटिव होता है। इस भाई ने आपका अपमान किया, तो आपको क्या होगा? खराब विचार आएँगे। विचार आ रहे हों न, तो उन्हें इकट्ठे करके और फिर एक जगह दबा देना और फिर भगवान से माफी माँग लेना कि 'इनके लिए खराब विचार आया उसके लिए माफी माँगता हूँ'। ऐसा यदि दस-पंद्रह साल करोगे तो इस सत्युग का अच्छी तरह से लाभ मिल जाएगा। दिक्कत होगी ऐसा करने में?

प्रश्नकर्ता : दिक्कत नहीं होगी।

दादाश्री : और अच्छे विचार तो बहुत करना। जान-बूझकर बैठ-बैठकर अच्छे ही विचार करने चाहिए कि 'किस तरह से लोगों का अच्छा हो, किस तरह से लोगों का भला हो, मेरे पड़ोसी किस तरह से सुखी हो' ऐसी ही भावना करो। किसी जीव को दुःख न हो, ऐसी भावना होनी चाहिए। सुख किससे मिलता है? तब कहते हैं, 'यदि आप किसी भी जीव को सुख दोगे तो उसके फल के रूप में आपको सुख मिलेगा और दुःख दोगे तो दुःख मिलेगा। अतः सुख-दुःख जैसा दोगे वैसा मिलेगा।' यानी कोई दुःख दे जाए तो आपको जमा कर लेना है, लेकिन वापस नहीं देना है।

(सूत्र-6)

'हाँ' से मुक्ति और 'ना' से बंधन। 'ना' शब्द तो निकाल देना डिक्शनरी में से । इस 'ना' से ही यह जगत् खड़ा रहा है।

प्रश्नकर्ता : दादा, पूरे दिन आप काम करके आए हैं और बहुत भूख लगी है लेकिन शाम को ठीक से खाना नहीं मिले तो आप क्या करोगे?

दादाश्री : 'भुगते उसी की भूल'।

प्रश्नकर्ता : दोनों तरफ से मार पड़ती है न!

दादाश्री : दोनों तरफ मार ही है, इस जगत् में सब गलत है। आपका हिसाब आकर ही रहेगा।

आप मना करोगे तो भी टेबल पर आ जाएगा। आप कहो, 'ये सब मत बनाना' तो भी वह आ ही जाएगा। मेरे लिए कितनी (सारी) चीज़ें आती हैं! तो मुझे भी बार-बार मना करना पड़ता है। ये कहते हैं, 'रस लाऊँ, आम लाऊँ।' अरे भाई, मुझे ज़रूरत नहीं है इनकी! कितनी (सारी) चीज़ें लाते हैं! उसमें भी मुझे तो ज़रूरत नहीं होती। मेरे लिए क्या-क्या नहीं लाते ये लोग? आपको क्या लगता है? भोजन के समय, हर समय क्या नहीं लाते होंगे ये लोग? लेकिन हमें ज़रूरत नहीं है किसी तरह की और तिरस्कार भी नहीं है। आपने दिया तो थोड़ा-सा टुकड़ा ले लेते हैं। आप बहुत आग्रह करो, तब नहीं खाना हो फिर भी एक टुकड़ा ले लेते हैं। आप कड़वा दो तो भी पी लेते हैं। थोड़ा सा पीते हैं। अपने को तो एडजस्ट हो जाना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा आपने यह जो बात कही कि आपको अगर कड़वा दिया हो तो भी आप ज़रा सा ले लेते हैं। हमें अगर कड़वा नहीं भाता हो तो हम क्यों लें? अर्थात् वह जो लाइकिंग (पसंद) है, अब उसकी बात कर रहे हैं हम।

दादाश्री : लेकिन 'ना' शब्द तो डिक्शनरी से निकाल देना। उस 'ना' की वजह से ही यह जगत् खड़ा रहा है। 'ना' कहने से ही लोग क्लेम (दावा) करते हैं। 'हाँ' लाओ। फिर चाहे मुँह में रखकर 'थू' करना हो तो कर सकते हो, हर्ज नहीं है! लेकिन उसकी इन्सल्ट (अपमानित) मत करो। हमें तो कई बार कहते हैं कि 'दादा प्रसाद लीजिए', तो ले लेता हूँ और मूँगफली जैसा हो तो ज़ेब में रख लेता हूँ। फिर जब बाहर जाता हूँ तब किसी को दे देता हूँ लेकिन इन्सल्ट नहीं करता। क्योंकि उसने तो मुझे 'व्यवस्थित' के आधार पर कहा कि, 'लीजिए'।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और आप तो दखल किए बिना नहीं रहते। दखल मत करो। यह पूरा जगत् व्यवस्थित है। जो होता है, वह व्यवस्थित है। हुआ, वह व्यवस्थित। व्यवस्थित नहीं लगता?

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित है।

दादाश्री : और जो कर रहे हैं वह भी 'व्यवस्थित' है। किसे डाँटोगे? बेटे को, बहू को? किसी को डाँटने जैसा है इस जगत् में? हमने तो क्लियर कट सारी ज्योग्राफी (भूगोल) दे दी है। बिल्कुल क्लियर कट। जैसे-जैसे क्लियर समझ में आता जाएगा, त्यों-त्यों कुछ और ही आनंद, कुछ और ही बात समझ में आएगी।

प्रश्नकर्ता : आप वह कहते हो न कि हमेशा पॉज़िटिव बोलो, नेगेटिव मत बोलना। पॉज़िटिव रहो, नेगेटिव मत बोलना। तो कैसे हो सकता है? पॉज़िटिव ही बोला जाए, वह कैसे हो सकता है? नेगेटिव तो बोल दिया जाता है।

दादाश्री : 'हाँ' से मुक्ति और 'ना' से बंधन। पॉज़िटिव 'हाँ' और 'ना' नेगेटिव। जिसे 'एडजस्ट' होने की कला आ गई, वह दुनिया में से मोक्ष की ओर मुड़ा। 'एडजस्टमेन्ट' हुआ उसे ज्ञान कहते हैं। जो 'एडजस्टमेन्ट' सीख गया वह तर गया। जो भुगतना है वह तो भुगतना ही होगा, लेकिन 'एडजस्टमेन्ट' आए उसे परेशानी नहीं आती, हिसाब साफ हो जाता है। सीधे के साथ तो हर कोई 'एडजस्ट' हो जाता है, लेकिन टेढ़े-कठिन-कड़क के साथ में, सभी के साथ 'एडजस्ट' होना आया तो काम हो गया। मुख्य चीज़ 'एडजस्टमेन्ट' है। 'हाँ' से मुक्ति है। हमने 'हाँ' कहा फिर भी 'व्यवस्थित' के बाहर कुछ होने वाला है? लेकिन 'ना' कहा तो महा *उपाधि*।

(सूत्र-7)

यह तो, पॉज़िटिव में मनुष्य है ही कहाँ? नेगेटिव साइड मे पड़ा है अभी तो। पॉज़िटिव मनुष्य तो है ही कहाँ? पॉज़िटिव मनुष्य कैसे होते हैं? यह जो अगरबत्ती है उसे हम जलाएँ तो यहाँ पूरे रूम में सुगंध आएगी या नहीं आएगी? वह खुद जलती है परंतु सभी को सुगंध देती है या नहीं देती? क्या ये मनुष्य सुगंध देते हैं?

प्रश्नकर्ता : पॉज़िटिव कैसे रहना है?

दादाश्री : बच्चों की बाबत में क्या करने से नेगेटिव रहते हैं, वह मुझे बताओ न!

प्रश्नकर्ता : बच्चे कुछ करते हों, कुछ उल्टा करते हों, तो हमें उन्हें कहना पड़ता है कि तू यह कर रहा है वह गलत है। तो वहाँ पर हमें उसे नेगेटिव बताना पड़ता है।

दादाश्री : हाँ, बताना है लेकिन वह आपके शब्दों को स्वीकार करे तो।

प्रश्नकर्ता : इसका अर्थ यह हुआ कि हमें बोलना आना चाहिए।

दादाश्री : बोलते समय वाणी अच्छी निकलनी चाहिए। मीठी, प्रेम वाली। आपको मैं जवाब देता ही हूँ न! लेकिन प्रेम से जवाब देता हूँ। वह स्वीकार होता है अंदर से। और हमारी वाणी तो आत्मभेदक है इसलिए सीधी आत्मा तक पहुँचती है। आत्मा के भीतर जाकर पूर्ण तक पहुँचाती है।

प्रश्नकर्ता : बहुत प्रेम से कहें तो भी नहीं सुनते।

दादाश्री : न सुने तो वे बच्चे हैं न! और वास्तव में वह नहीं करता, उसकी प्रकृति करती है। लेकिन उसे पता ही नहीं है न, बेचारे को।

प्रकृति से बाहर कोई मनुष्य चल ही नहीं सकता। 'हम' तो 'जानने वाले' हैं। यानी वे तो तूफान वगैरह करेंगे। तूफान नहीं करेंगे न, तो आगे चलकर वे समझदार नहीं होंगे। थोड़ा सख्त तो बच्चे को होना चाहिए न, तो वह आगे चलकर फिर बड़ी उम्र में नाजुक हो जाएगा। और अभी नाजूक हो न वह आगे चलकर बिगड़ जाएगा। यानी वह बच्चा गलत रास्ते पर जा रहा हो, चोरी वगैरह कर रहा हो, तो आप उसे डाँटो। वह चोरी करता है न, उसमें उसकी इच्छा न हो तब भी करता है। तो यदि आप उससे पूछो, कि 'यह चोरी करना तुझे पसंद है?' तब कहेगा, 'पसंद नहीं है, लेकिन मैं क्या करूँ?' ऐसा बोलेगा या नहीं बोलेगा?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर यदि आप उसे डाँटते रहे और मारते रहे तो फिर वह तय ही कर लेगा कि नहीं, मैं तो करूँगा ही। जाओ आप। यानी ऐसा मन में, मुँह से नहीं बोलेगा। मन में ऐसा तय करेगा?

प्रश्नकर्ता : करेगा।

दादाश्री : टेढ़ा हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : होता है न!

दादाश्री : इसलिए इसके बजाय आप उसे बैठाकर, 'देखो चोरी करने से ऐसा-ऐसा होता है। उसे जेल में ले जाते हैं, मारते हैं, ऐसा-वैसा होता है'। ऐसा उसे समझाते रहना है। डाँटना और मारना उसके बजाय उसे ऐसा सिखाना, तो वह पछतावा करेगा कि अब फिर से ऐसा नहीं

करूँगा। उसके बावजूद भी फिर से हो जाएगी, यदि उसकी सौ परतें होगी तो। तो वापस फिर से पछतावा करवाना। टेढ़ा हो जाए तो बेकार हो जाएगा। बहुत डाँट-डपट करें तो टेढ़ा हो जाता है या नहीं हो जाता? आपको क्या लगता है मनुष्य टेढ़ा हो जाता है, बहुत ऐसा करें तो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अनुभव में है।

दादाश्री : 'जाओ, जो बने वह कर लेना, मैं तो करूँगा' ऐसा कहेगा, अंदर मन में ही मन में! यदि मुँह से बोले तो मार मिलेगी! इसलिए समभाव से *निकाल* करना है फाइलों का।

एक भी शब्द ऐसा मत बोलना कि जो किसी को भी किंचित्मात्र दु:खदायी हो जाए। सुखदायी हो जाए, ऐसा बोलना। यानी राइट साइड (सही दिशा) के शब्दों को बोलना और लेफ्ट साइड (गलत दिशा) के शब्द नहीं होने चाहिए।

पहले तो इस दुनिया में से नेगेटिव खत्म करना है। नेगेटिव को नेगेटिव पहचानकर उसे खत्म करना है।

परिणाम प्रेम से (व्यवहार) किए बिना नहीं आता। एक पौधा भी पाल-पोसकर बड़ा करना हो न, तो भी प्रेम से आप करो, तो बहुत अच्छा उगता है। पर वैसे ही पानी डालो और चीखो-चिल्लाओ तो कुछ नहीं होता। आप कहो कि ओहोहो! बहुत अच्छा पौधा हुआ है, तो उसे अच्छा लगता है! वह भी अच्छे फूल देता है बड़े-बड़े! तो फिर ये मनुष्यों को तो कितना अधिक असर होता होगा!

यह एक गुलाब का फूल देखते हैं तो भी कहते हैं, कितना अच्छा गुलाब है! और ये मनुष्य दिखाई दें तो (उसे) अच्छे नहीं लगते। यदि यहाँ एक अगरबत्ती जल रही हो तो पूरे रूम को सुगंधित कर देती है और इन मनुष्यों में से तो बदबू आती है, अरे! आप कैसे लोग हो? बदबू आती है। बाहर किसी की सुगंध ही नहीं आती, वर्ना पच्चीस-पच्चीस मील के एरिया में (दूर तक) सुगंध फैल सकती है, नहीं फैल सकती सुगंध? यदि अगरबत्ती की सुगंध फैल सकती है, तो व्यक्ति की फैल सकती है या नहीं फैल सकती? तू बड़ौदा शहर में रहता है, तो किसकी सुगध फैली हुई दिखाई दी? अरे जन्म लिया और मर गए, जन्म लिया और मर गए। यों तो कुत्ते भी खा-पीकर मर जाते हैं, उसमें तूने क्या नया किया? मनुष्यपना गँवा दिया! मनुष्य जीवन व्यर्थ गया! मनुष्य जीवन यानी बहुत कीमती। अचिंत्य चिंतामणी देह, मनुष्य कहलाता है।

(सूत्र-8)

किसी के भी अवगुण नहीं देखने चाहिए। देखने ही हों, तो खुद के देखो न! यह तो, दूसरों की भूलें देखते हैं, तो दिमाग कैसा हो जाता है! उसके बजाय दूसरों के गुण देखें तो दिमाग कैसा खुश हो जाता है!

इस जगत् में जो कुछ भी हो रहा है, वह प्रकृति के गुणों से होता है, आत्मा के गुणों से नहीं होता। इसलिए सभी को प्रकृति के गुणों को पहचान लेना चाहिए। प्रकृति के दोषों की वजह से सामने वाला दोषित लगता है। हमें खुद प्रकृति के गुणों को ही देखना है। इससे क्या होता है कि 'उन' दोषों को मज़बूत होने का अवकाश ही नहीं मिलता।

हमारे इतने सारे, हज़ारों महात्मा हैं, फिर भी क्यों सब के साथ रास आता है? क्योंकि सभी प्रकृतियों को हम पहचानते हैं। उनके काँटों

को हम नहीं छूते, हम तो उनके फूलों को ही देखते हैं!

यदि चंपा, गुलाब की भूल निकाले कि, 'तुझ में काँटे हैं, तुझ में कोई बरकत नहीं', तो गुलाब उससे कहता कि, 'तू तो सूखे ठूँठ जैसा दिखता है' और झगड़ा हो जाता। बगीचे में यदि ये प्रकृतियाँ बोल सकती तो पूरे बगीचे में लड़ाई हो जाती। उसी तरह यह संसार भी बगीचा ही है। यह (मनुष्य) प्रकृति बोलती है, इसलिए औरों की भूल निकालने से लड़ाई हो जाती है।

मनुष्यों की प्रकृतियाँ तरह-तरह की होती हैं। पहले सत्युग में घर के सभी लोग गुलाब जैसे होते थे। अभी तो एक मोगरा, एक चंपा, एक गुलाब, ऐसे अलग-अलग इस कलियुग में इकट्ठे होते हैं! सभी अलग-अलग प्रकृतियाँ इकट्ठी हो जाती हैं। वैसे ही ये छोटे-बड़े सब लोग इकट्ठे हो जाते हैं। उसमें बाप को होता है कि सब मेरी तरह गुलाब बन जाएँ। लेकिन यदि चंपा बन जाए, तो बाप कहेगा कि, 'नहीं चलेगा, सब गुलाब ही चाहिए।' अरे! यह प्रकृति का बगीचा तो देख! सभी गुलाब हो जाएँगे तो बगीचा कैसे कहलाएगा? वह तो गुलाब का खेत कहलाएगा! तुझे बगीचे का विकास करना है या खेत का?

कलियुग में बाप कंजूस हो, माँ कंजूस हो और बेटा ऐसा हो कि फ़िजूल खर्चा करे तो माँ-बाप, बेटे को फ़िजूलखर्च कहते हैं। अरे! ज़रा धीरज तो रख। इस फ़िजूलखर्च वाली प्रकृति में फूल खिलेंगे। यह 'दादा' की दृष्टि मिल जाए तो प्रकृतिभेद नहीं पड़ेंगे और झगड़े नहीं होंगे। हर एक प्रकृति में फूल आएँगे, इसलिए इंतज़ार करो। यह तो लोग क्या करते हैं कि गुलाब में फूल आए हों और चंपा में नहीं आए हों, तो चंपा की डाली काट देते हैं। लेकिन धीरज रखे तो फूल सूंघने को मिलेंगे। इस गुलाब के पौधे को देखे और फूल नहीं देखे तो कहेगा कि 'यह काँटे वाला पौधा है, इसलिए उखाड़ डालो।' अरे नहीं, ये काँटें हैं तो साथ ही कोई अच्छा गुण होगा, ऐसा कुदरत में नियम है। इसलिए राह देखो। धीरज से देखो उस काँटे के पौधे में से गुलाब निकलेंगे।

एक बाप अपने बेटे को मार रहा था। अरे, नहीं मारते। अगर ऐसा हो कि डाँटने पर वह सुन ले तभी डाँटा जा सकता है। नहीं तो कलियुग में डाँटने जाएँ तो बच्चे उल्टे रास्ते चले जाते हैं। उन्हें तो (प्रेम से) मोड़ने के प्रयत्न करने चाहिए।

अपने में बरकत होगी तो *'हाथिआ थोरमांय प्रगटे सुवास।'* (थुहर में भी सुगंध प्रकट होगी।) प्रकृति एक ओर खराब हो तो दूसरी ओर उच्च प्रकार की होती है, ऐसा है।

यह तो ऐसा है न, कि बैन्ड में यदि सिर्फ रामढोल ही हो तो उसे बैन्ड कैसे कहेंगे? उसमें तो एक रामढोल, एक बाँसुरी वाला, एक बाजे वाला, ऐसे अलग-अलग बजाने वाले चाहिए। तभी वह बैन्ड शोभा देगा। कब कौन सी प्रकृति में कैसे फूल आएँगे, वह कहा नहीं जा सकता। इसीलिए धीरज रखना पड़ेगा।

सभी में अलग-अलग प्रकार की शक्तियाँ होती हैं और कमियाँ भी अलग-अलग प्रकार की होती हैं। सत्युग में कैसा था कि यदि घर में एक तीखी प्रकृति होती थी, तो घर के सभी लोग तीखे होते थे। अभी कलियुग में एक तीखा, दूसरा खट्टा और तीसरा कड़वा ऐसे अलग-अलग प्रकृति के व्यक्ति होते हैं, इसीलिए एडजस्टमेन्ट ही नहीं

हो पाता। पति जल्दी उठे और पत्नी देर से उठे, तो फिर सुबह-सुबह ही कलह खड़ा हो जाता है। और इस तरह संसार खारा कर देते हैं। लेकिन यदि प्रकृति को एडजस्ट होना आ जाए, तो काम हो जाएगा।

सभी के दोष, वे तो गटर के समान है। उस गटर को खोलना ही मत। किसी में कोई दोष होता है, कोई चिढ़ता है, कोई उतावला होकर घूमता है, ऐसा देखना वह गटर खोला कहलाता है। उसके बजाय गुणों को देखना अच्छा है। गटर तो अपना खुद का ही देखने योग्य है। यदि पानी भर गया हो, तो खुद का गटर साफ करना चाहिए। यह तो गटर भर जाता है लेकिन समझ में नहीं आता।

किसी के बारे में ज़रा सा भी उल्टा बोले, तो उतना नुकसान तो हुआ ही समझो। इन बाहर वाले गटर के ढक्कन को कोई नहीं खोलता, लेकिन लोगों के गटर के ढक्कन खोलते ही रहते हैं।

किसी के भी अवगुण नहीं देखने चाहिए। देखने ही हों, तो खुद के देखो न! यह तो दूसरों की भूलें देखें, तो दिमाग कैसा हो जाता है। उसके बजाय दूसरों के गुण देखें, तो दिमाग कैसा खुश हो जाता है!

(सूत्र-9)

कोई प्राकृतिक पुष्प बेकार नहीं है, परंतु वह किस काम का है वह ढूँढ निकालना चाहिए।

एक भाई थे। वे रात को दो बजे न जाने क्या-क्या करके घर आते होंगे, उसका वर्णन करने जैसा नहीं है। आप समझ जाओ। तब फिर घर में सबने निश्चय किया कि इनको डाँटें या घर में नहीं घुसने दें? क्या उपाय करें? वे उसका अनुभव कर आए। बड़े भाई कहने गए तो उसने बड़े भाई से कहा कि, 'आपको मारे बगैर छोड़ूँगा नहीं।' फिर घर वाले सभी मुझे पूछने आए कि, 'इसका क्या करें? यह तो ऐसा बोलता है।' तब मैंने घर वालों को कह दिया कि किसीको उसे एक अक्षर भी नहीं कहना है। आप बोलोगे तो वह ज़्यादा फ्रंट (उद्दंड) हो जाएगा, और घर में घुसने नहीं दोगे तो वह विद्रोह करेगा। उसे जब आना हो, तब आए और जब जाना हो, तब जाए। आपको राइट भी नहीं बोलना है और रोंग भी नहीं बोलना है, राग भी नहीं रखना है और द्वेष भी नहीं रखना है, समता रखनी है, करुणा रखनी है। तब तीन-चार साल बाद वह भाई सुधर गया! आज वह भाई व्यापार में बहुत मदद करता है! जगत् निकम्मा नहीं है, परंतु काम लेना आना चाहिए। सभी भगवान हैं, और हरएक अलग-अलग काम लेकर बैठे हैं, इसलिए नापसंद जैसा रखना मत।

कोई प्राकृतिक पुष्प बेकार नहीं है, परंतु वह किस काम का है वह ढूँढ निकालना चाहिए। तुझे पूरणपूरी (मीठी रोटी) बनानी नहीं आती, यह नहीं आता, वह नहीं आता, ऐसा कहने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन उसे क्या आता है, उसका पता लगाओ।

आप घर में भी किसी को नहीं डाँटना। किसी का अहंकार नहीं दुभे ऐसा रखना। किसी का भी अहंकार नहीं दुभाना चाहिए। लोगों का अहंकार दुभाने से वे आपसे जुदा हो जाते हैं, फिर कभी आपको नहीं मिलते। आपको किसी से ऐसा नहीं कहना चाहिए कि, 'तू यूज़लेस (निकम्मा) है, तू ऐसा है, वैसा है।' ऐसे किसी का मान भंग नहीं करना चाहिए। हाँ, डाँट सकते हैं। डाँटने में हर्ज नहीं है। कुछ भी हो लेकिन

किसी का अहंकार नहीं दुभाना चाहिए। उसके अहंकार पर चोट नहीं लगनी चाहिए।

(सूत्र-10)

सामने वाले की टीका करना उसकी आराधना की टीका करने के बराबर है। वह भयंकर गुनाह है। आप सामने वाले का समर्थन न दे सको तो कोई बात नहीं, लेकिन टीका तो करना ही नहीं। यदि टीका है तो वहाँ वीतरागों का विज्ञान नहीं है, वहाँ धर्म है ही नहीं, अभेदता है ही नहीं!

प्रश्नकर्ता : कोई नया सत्संगी आया हो और आप उसके साथ बातें कर रहे हों, सब बैठे हों, तब यदि वह कोई जवाब दे न, तब हँसना आता है।

दादाश्री : उस समय हँसना आए, वह स्वाभाविक है। लेकिन बाद में उस पर टीका टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उसमें टीका नहीं होती, लेकिन हँसना आता है।

दादाश्री : हँसना तो एक प्रकार का हास्य नाम का रोग है। लेकिन फिर टीका नहीं करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा, उस हास्य के पीछे खुद का आशय ऐसा होता है कि वह बेवकूफ है, कुछ नहीं जानता और हम बहुत कुछ जान चुके हैं।

दादाश्री : नहीं, ऐसे हँसना नहीं चाहिए। जो टीका करता है, वह तो ऐसा कहता है कि 'मैं हाज़िर हूँ।' वह अपने स्वभाव का प्रदर्शन करता है। आज तो लोग आपकी टीका भी करते हैं। 'खुद क्या कर रहे हैं!' इसका भान नहीं है बेचारों को, इसलिए ऐसा करते रहते हैं। दु:ख वाला ही किसी की टीका करता है, दु:ख वाला किसी को परेशान करता है। सुखिया मनुष्य किसी की टीका नहीं करता।

प्रश्नकर्ता : आप्तसूत्र में लिखा है कि 'हमारी टीका करने का लोगों को अधिकार है, किंतु हमें किसी की टीका करने का अधिकार नहीं है।' यहाँ निंदा और टीका में क्या अंतर है?

दादाश्री : टीका यानी, किसी के प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले दोषों को ओपन (खुला) करना, वह टीका कहलाती है। और निंदा यानी दिखाई देने वाले और नहीं दिखाई देने वाले, सभी दोषों के बारे में बोलते रहना। उस व्यक्ति के बारे में उल्टा ही बोलते रहना, वह निंदा कहलाती है। इस वातावरण में सारे परमाणु ही भरे पड़े हैं। इसीलिए तो हम कहते हैं कि किसी की निंदा मत करना।

सामने वाले को सब पहुँच जाता है। गैरज़िम्मेदारी वाला एक भी शब्द किसी के लिए नहीं कहना चाहिए और यदि कहना ही है तो कुछ अच्छा कहो। कीर्ति वाला कहो। अपकीर्ति वाला मत कहना।

निंदा करने से हमें क्या फायदा? उसमें तो बहुत नुकसान है। इस जगत् में अगर कोई ज़बरदस्त नुकसान है तो वह निंदा करने में हैं। इसीलिए किसी की भी निंदा करने का कारण ही नहीं होना चाहिए।

किसी को 'गलत' कहना, वह खुद के आत्मा पर धूल उड़ाने बराबर है।

सामने वाले की टीका करो तो वह उसकी आराधना की टीका की कहलाती है, वह भयंकर

गुनाह है। आप सामने वाले का समर्थन नहीं कर सकें तो कोई हर्ज नहीं, मगर टीका तो करना ही नहीं। यदि टीका है तो वीतराग का विज्ञान नहीं है। वहाँ धर्म है ही नहीं। अभेदता है ही नहीं। टीका हर तरह से बाधक है। टीका करने की फुरसत ही नहीं होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : टीका करने वाले जीव को अपने काम में कुछ रुचि होगी तभी टीका करेगा।

दादाश्री : अब, टीका वह क्या है कि हमेशा स्पर्धा में, रेसकोर्स में रहते हैं। टीका का खास तौर पर कहाँ इस्तेमाल होता है? स्पर्धा में, रेसकोर्स में। मैं बड़ा और वह छोटा। टीका वह तो अहंकार का मूल गुण है। वह स्पर्धा का गुण है, इसलिए टीका तो रहेगी ही। और स्पर्धा के बिना संसार में रहा नहीं जा सकता। स्पर्धा जाए तो छुटकारा हो जाए।

टीका करने से पहले तो अपने कपड़े बिगड़ते हैं, और दूसरी टीका से देह बिगड़ता है और तीसरी टीका से हृदय बिगड़ता है। बस, इतना ही! इसलिए किसी की भी बात में गहरे मत उतरो। क्योंकि वह तो खुद, खुद का मालिक है न! उसकी मालिकी के 'टाइटल' उसके खुद के हैं। हम उसकी टीका कैसे कर सकते हैं? नहीं तो फिर हम 'ट्रेसपासर' (अतिक्रमण करने वाला) कहलाएँगे!

किसी की भी टीका करनी मतलब अपना दस रुपये का नोट भुनाकर एक रुपया लाना वह। टीका करने वाला हमेशा खुद का ही खोता है। जिसमें कुछ भी मिलता नहीं है। ऐसी मेहनत हमें नहीं करनी है। टीका से आपकी ही शक्तियाँ व्यर्थ होती हैं। हमें यदि दिखा कि यह तिल नहीं है रेती ही है, तो फिर उसे पीलने की मेहनत किसलिए करनी चाहिए? टाइम और एनर्जी (समय और शक्ति) दोनों 'वेस्ट' (बेकार) जाते हैं। यह तो टीका करके सामने वाले का मैल धो दिया और तेरा खुद का कपड़ा मैला किया! वह अब कब धोएगा?

किसी की ज़रा सी भी निंदा करने गए तो वह 'केवलज्ञान' में बाधक है। अरे! आत्मज्ञान में भी बाधक है। समकित में भी बाधक है।

(सूत्र-11)

खुद की जिम्मेदारियों का भान नहीं है। इसलिए गैरजिम्मेदारी वाला मत बोलना, गैरजिम्मेदारी वाला आचरण मत करना, गैरजिम्मेदारी वाला कुछ भी मत करना। सबकुछ पॉज़िटिव लेना। किसी का अच्छा करना हो तो करने जाना, वर्ना बुरे में तो पड़ना ही नहीं। 'पॉज़िटिव' रहना। जगत् में 'पॉज़िटिव' ही सुख देगा और 'नेगेटिव' सब दुःख देगा।

प्रश्नकर्ता : आपके जैसी कषाय रहित पॉज़िटिव वाणी कब होगी?

दादाश्री : ये सारे जो नेगेटिव शब्द हैं आपके, वो बोलने बंद होंगे तब। क्योंकि हरएक शब्द उसके गुण-पर्याय सहित होता है।

भीतर आत्मा है, आत्मा की हाज़िरी है। इसलिए हमेशा पॉज़िटिव बोलो। पॉज़िटिव में नेगेटिव नहीं बोलना चाहिए। पॉज़िटिव हुआ, उसमें नेगेटिव बोलें, वह गुनाह है और पॉज़िटिव में नेगेटिव बोलते हैं, इसलिए ये सारी मुश्किलें खड़ी होती हैं। 'कुछ भी नहीं बिगड़ा है' ऐसा बोलते ही भीतर कितना ही बदलाव हो जाता है। इसलिए पॉज़िटिव बोलो।

ये टेपरिकॉर्ड और ट्रान्समीटर, ऐसे-ऐसे तो कितने ही साधन अभी बन गए हैं। तो बड़े-बड़े लोगों को भय लगता ही रहता है कि कोई कुछ टेप कर लेगा तो? अब इनमें तो शब्द टेप होते हैं, उतना ही है। परंतु मनुष्य का शरीर, मन सबकुछ ही टेप हो जाए, ऐसा है। उसका लोग थोड़ा-सा भी भय नहीं रखते। यदि सामने वाला सो रहा हो और आप कहो कि 'यह नालायक है।' तो वह उसके अंदर टेप हो गया! वह फिर उसे फल देगा। अर्थात् सोते हुए मनुष्य के बारे में भी नहीं बोलना चाहिए। एक अक्षर भी नहीं बोलना चाहिए। क्योंकि सबकुछ टेप हो जाए, ऐसी यह मशीनरी है! बोलना हो तो अच्छा बोलना कि, 'साहब, आप बहुत अच्छे व्यक्ति हैं', अच्छा भाव रखना, तो उसके फलस्वरूप आपको सुख मिलेगा। परंतु थोड़ा-सा भी उल्टा बोले, अंधेरे में भी बोले या अकेले में भी बोले, तो उसका फल कड़वा ज़हर जैसा आएगा। यह सब टेप ही हो जाने वाला है। इसलिए अब यह अच्छा टेप करवाओ।

प्रश्नकर्ता : कड़वा तो चाहिए ही नहीं।

दादाश्री : कड़वा तो, आपको चाहिए तो बोलना, नहीं चाहिए तो मत बोलना। कोई मारे, फिर भी उसे कड़वा मत बोलना। उसे कहना कि, 'तेरा उपकार मानता हूँ।'

इस काल में किसी को समझाने जाया जाए, ऐसा नहीं है। यदि समझाना आए तो अच्छे शब्दों में समझाओ कि यदि वह टेप हो जाए, फिर भी जिम्मेदारी नहीं आए। इसलिए 'पॉज़िटिव' रहना। जगत् में 'पॉज़िटिव' ही सुख देगा और 'नेगेटिव' सभी दुःख देगा। यानी कितनी बड़ी जोखिमदारी है! न्याय-अन्याय देखने वाला तो बहुत लोगों को गालियाँ देता है। न्याय-अन्याय तो देखने जैसा ही नहीं है। न्याय-अन्याय तो एक थर्मामीटर है जगत् का, कि किसे कितना बुख़ार उतर गया और कितना चढ़ा? जगत् कभी भी न्यायी बनने वाला नहीं है और अन्यायी भी होने वाला नहीं है। ऐसे का ऐसा ही मिलाजुला चलता रहेगा।

यह जगत् हमेशा से ऐसे का ऐसा ही है। सत्युग में ज़रा कम बिगड़ा हुआ वातावरण होता है, अभी अधिक असर है। रामचंद्रजी के समय में सीता का हरण करने वाले लोग थे, तो अभी नहीं होंगे? यह चलता ही रहेगा। यह मशीनरी ऐसी ही है पहले से। उसे पता ही नहीं चलता, खुद की जिम्मेदारियों का भान नहीं है। इसलिए गैरजिम्मेदारी वाला मत बोलना, गैरजिम्मेदारी वाला आचरण मत करना, गैरजिम्मेदारी वाला कुछ भी मत करना। सबकुछ पॉज़िटिव लेना। किसीका अच्छा करना हो तो करने जाना, नहीं तो बुरे में तो पड़ना ही नहीं और बुरा सोचना भी नहीं। बुरा सुनना भी नहीं किसीका। बहुत जोखिमदारी है। नहीं तो इतना बड़ा जगत् उसमें मोक्ष तो खुद के अंदर ही पड़ा हुआ है और मिलता नहीं है और कितने ही जन्मों से भटक रहा है!

सामान्य व्यवहार में बोलने में हर्ज नहीं है, परंतु देहधारी मात्र के लिए कुछ भी उल्टा-सीधा बोलोगे तो वह अंदर टेपरिकॉर्ड हो जाएगा! इस संसार के लोगों को रिकॉर्ड करना हो तो देर ही कितनी? एक ज़रा-सा छेड़ो तो प्रतिपक्षी भाव टेप होते ही रहेंगे। 'तुझमें कमज़ोरियाँ ऐसी हैं कि छेड़ने से पहले ही तू बोलने लगेगा।'

प्रश्नकर्ता : खराब बोलना तो नहीं है, परंतु खराब भाव भी नहीं आना चाहिए न?

दादाश्री : भाव नहीं आना चाहिए, वह बात सही है। भाव में आए वह बोले बगैर रहा

नहीं जाता। इसलिए बोलना यदि बंद हो जाए न तो भाव बंद हो जाएँगे। ये भाव तो बोली के पीछे रहे हुए प्रतिघोष हैं। प्रतिपक्षी भाव तो उत्पन्न हुए बिना रहते ही नहीं न! हमें प्रतिपक्षी भाव नहीं होते हैं, वहाँ तक आपको भी पहुँचना है। उतनी अपनी कमज़ोरी जानी ही चाहिए कि प्रतिपक्षी भाव उत्पन्न नहीं हों। और शायद कभी हो गए हों तो आपके पास प्रतिक्रमण का हथियार है, उससे मिटा देना। पानी कारखाने में गया हो, लेकिन बर्फ नहीं बने, तब तक हर्ज नहीं है, बर्फ बन जाने के बाद हाथ में नहीं रहता।

भीतर अनंत शक्तियाँ हैं। जिस दिशा में ले जानी हों, वहाँ ले जा सको, वैसे हो। रास्ता जानने की ज़रूरत है।

शास्त्रों ने कहा है कि खराब मत बोलना, खराब मत सोचना। हम सोचते हैं कि ऐसा क्यों गाते रहते होंगे ये? ये मशीनरी ही ऐसी है कि सब टेप हो जाता है। फिर जब पुरावा (संयोग) आ मिलें तब फज़ीता होता है।

घर में पत्नी को डाँटें तो वह समझता है कि 'किसीने सुना ही नहीं न, यह तो यों ही है न!' छोटे बच्चे हों तब उनकी उपस्थिति में पति पत्नी कुछ भी बोलते हैं। वे समझते हैं कि यह छोटा बच्चा क्या समझने वाला है? अरे, अंदर टेप हो रहा है, उसका क्या? वह बड़ा होगा तब वह रिकॉर्ड हो चुका बाहर निकलेगा!

प्रश्नकर्ता : जिसे टेप में रिकॉर्ड नहीं करना हो उसके लिए क्या रास्ता है?

दादाश्री : कोई भी स्पंदन नहीं करना चाहिए। सबकुछ देखते ही रहना चाहिए, परंतु ऐसा होता नहीं है न! यह भी मशीन है और फिर पराधीन है। इसलिए हम दूसरा रास्ता बताते हैं कि यदि टेप हो जाए तो तुरन्त मिटा देना, तो चलेगा। यह प्रतिक्रमण उसे मिटाने का साधन है। उससे एकाध जन्म में परिवर्तित होकर ऐसा सब बोलना बंद हो जाएगा।

(सूत्र-12)

कोई भी संयोग जो हमें प्राप्त हुआ, उसके लिए शिकायत नहीं रहे, वैसा हल लाना है। यदि खुश नहीं हो, उसमें हर्ज नहीं है, लेकिन शिकायत नहीं रहनी चाहिए। हम ज्ञान वाले रहे, इसलिए प्लस-माइनस कर देना पड़ेगा। यह गुणा-भाग किसलिए सिखाते हैं? संसार में निबेड़ा लाने के लिए।

एक व्यक्ति ने मुझसे पूछा था कि मेरे एक चाचाजी का बेटा मेरे वहाँ आता है। वह कुछ नहीं बोलता। लेकिन जब वह आता है तब मुझे खराब विचार आते रहते हैं कि 'यह नालायक कहाँ से आया! यह नालायक कहाँ से आया।' 'उसे डाँटकर निकाल दूँ, ऐसा है, वैसा है', ऐसे विचार आते हैं। फिर मुझसे पूछने लगा, 'परंतु यह क्या है? 'मेरा यह रोग किस तरह मिटेगा? आपने ज्ञान दिया है, तभी से मुझे सामने वाले का दोष नहीं लगता है।' तब मैंने उसे समझाया कि एक दिन दादा का नाम लेकर इतना करना। तब पूछने लगा, 'क्या?' मैंने कहा, 'उस भाई का क्या नाम है?' तब कहता है, 'सोमचंदभाई'। मैंने कहा, उनके आते ही, मन में खराब विचार आए, उनके सामने तू मन में बोलना कि, 'सोमचंद तो बहुत अच्छे इंसान हैं, बहुत अच्छे इंसान हैं, कितने लायक इंसान हैं!' तू बोलना, ऐसा बोलते ही अच्छा हो जाएगा। तो वह ऐसा बोलने लगा न, तो पंद्रह दिन में अच्छा हो गया। पंद्रह दिन बाद खराब विचार आने बंद हो गए। जिसके लिए खराब विचार आते हैं, उसके लिए भीतर अच्छे

विचार करो, तो खराब विचार चले जाएँगे एकदम से। बच्चों के लिए खराब विचार आए तो भीतर कहना कि, दादा कह रहे थे कि 'मेरे बेटे जैसा किसी का बेटा नहीं है और ये खराब विचार क्यों आ रहे हैं? इससे तुरंत ही वे सब चले जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : हम उसके सामने ऐसे विचार करते हैं तो उसका असर होता है?

दादाश्री : हाँ, ऐसा करते ही तुरंत असर हो जाता है। मैं ये सब असर के ही उपाय बता रहा हूँ। मन 'खराब है, खराब है', ऐसा बोलता रहता है, तो हम क्या करते हैं? किसी के लिए खराब अभिप्राय निकलते हैं न, तो हम एक तरफ ऐसा बोलते हैं कि, 'बहुत उपकारी है, बहुत उपकारी है'। तो प्लस-माइनस (जोड़-बाकी) होकर खत्म हो जाता है। क्योंकि अपना भरा हुआ माल ऐसा है। इसलिए ऐसा माल भेजो कि उस माल का कुछ भी न चले। और उसका सुनेंगे तो हम पागल हो जाएँगे।

तू फरियाद करेगा तो तू फरियादी बन जाएगा। मैं तो जो फरियाद करने आए, उसे ही गुनहगार मानता हूँ। तुझे फरियाद करने का समय ही क्यों आया? फरियाद करने वाला ज़्यादातर गुनहगार ही होता है। खुद गुनहगार होता है तो फरियाद करने आता है। तू फरियाद करेगा तो तू फरियादी बन जाएगा और सामने वाला आरोपी बन जाएगा। इसलिए उसकी दृष्टि में आरोपी तू ठहरेगा। इसीलिए किसी के विरुद्ध फरियाद नहीं करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : 'वे' उल्टे दिखें तो कहना, कि 'वे तो सबसे अच्छे इंसान हैं, तू ही गलत है।' ऐसे, गुणा हो गया हो तो भाग कर देना चाहिए और भाग हो गया हो तो गुणा कर देना चाहिए। यह गुणा-भाग किसलिए सिखाते हैं? संसार में निबेड़ा लाने के लिए।

वह भाग करे तो आप गुणा करना, ताकि रकम उड़ जाए। सामने वाले व्यक्ति के लिए विचार करना कि उसने मुझे ऐसा कहा, वैसा कहा, वही गुनाह है। यह रास्ते में जाते समय दीवार से टकराएँ तो उसे क्यों नहीं डाँटते? पेड़ को जड़ क्यों कहा जाता है? जिसे चोट लगती है वे सब हरे पेड़ ही हैं! गाय का पैर अपने ऊपर पड़े तो क्या आप कुछ कहते हो? ऐसा ही इन सब लोगों का है। 'ज्ञानी पुरुष' सबको किस तरह माफ कर देते हैं? वे समझते हैं कि यह बेचारे समझते नहीं हैं, पेड़ जैसे हैं। और समझदार को तो कहना ही नहीं पड़ता। वह तो अंदर तुरंत प्रतिक्रमण कर डालता है।

(सूत्र-13)

नेगेटिव को तोड़ने में जितना टाइम यूज़लेस जाता है उसके बजाय पॉज़िटिव में जोइन्ट हो जाए तो अपने आप, ऑटोमेटिकली ही टूट जाएगा। हम कहते हैं कि इस पॉज़िटिव अहंकार के लिए तू ये नौ कलमें लिख ले और उस अनुसार करने लग न!

प्रश्नकर्ता : ये जो 'नौ कलमें' दी हैं, वे विचार, वाणी और वर्तन की शुद्धता के लिए ही दी हैं न?

दादाश्री : नहीं-नहीं। अक्रम मार्ग में ऐसी शुद्धता की ज़रूरत ही नहीं है। ये 'नौ कलमें' तो आपके जो सब हिसाब बंधे हुए हैं, अनंत जन्मों से सब के साथ, उन हिसाब से छूटने के लिए दी हैं, बहीखाते साफ करने के लिए दी हैं।

नौ कलमें तो बहुत ही बोलने जैसी हैं।

इन कलमों का वांचन होगा तो विचारों में बहुत बदलाव आ जाएगा। आपका मन जिस आधार पर इधर-उधर खिंचा जाता है न, तो ये नौ कलमें बोलने से वह खिंचना बंद हो जाएगा। जितने गुनाह किए हैं, वे सारे गुनाह कम हो जाएँगे। उसके बाद यह ज्ञान ठीक से रहेगा। अत: यह सब जितना मैंने बताया है न, उतना करोगे तो बहुत हो गया।

पॉज़िटिव अहंकार के लिए ये सारे धर्म चल रहे हैं, एकमात्र पॉज़िटिव के लिए ही। हम कहते हैं कि इस पॉज़िटिव अहंकार के लिए तू ये नौ कलमें लिख ले और उस अनुसार करने लग न! इनमें सारे धर्म आ गए हैं। किसी का भी नेगेटिव मत करना।

नेगेटिव को तोड़ने में जितना टाइम यूज़लेस जाता है उसके बजाय पॉज़िटिव में जोइन्ट हो जाए तो अपने आप, ऑटोमेटिकली ही टूट जाएगा। किंतु नेगेटिव को तोड़ने में इन लोगों का बहुत टाइम चला जाता है। अरे, अशुभ कर्मों को दूर करने में व्यर्थ ही टाइम क्यों बर्बाद करते हो?

इस काल के हिसाब से लोगों में इतनी शक्ति नहीं है। जितनी शक्ति है उतना ही दिया है। ये नौ कलमें हम आजीवन पालन करते आए हैं, यानी यह पूँजी है। अर्थात् यह हमारा रोज़मर्रा का माल है जो ज़ाहिर किया है। अंतत: लोगों का कल्याण हो उसकी खातिर। कई सालों से, चालीस-चालीस सालों से निरंतर ये नौ कलमें प्रतिदिन (हमारे) भीतर चलती ही रही हैं। जो लोगों के लिए मैंने जाहिर (बताई) की हैं।

प्रश्नकर्ता : यह सब पढ़ा न, यह तो ज़बरदस्त बात है। छोटा आदमी भी अगर समझ जाए तो उसकी सारी ज़िंदगी सुखमय जाए।

दादाश्री : हाँ, बाकी समझने जैसी बात ही (आज तक) उसे नहीं मिली। यह पहली बार स्पष्ट समझने जैसी बात मिल रही है। अब यह प्राप्त हो जाए तो हल आ जाए।

प्रश्नकर्ता : जो उल्टा व्यवहार हो जाता है, उसके पीछे का कारण बदलने के लिए यह ज़बरदस्त उपाय है।

दादाश्री : बड़ा पुरुषार्थ है, ज़बरदस्त। यानी यह सबसे बड़ी चीज़ हमने बता दी, लेकिन अब लोगों को समझ में आ जाना चाहिए न! इसलिए फिर हमने अनिवार्य कर दिया कि इतना तो आपको करना है। भले ही समझ में न आए परंतु पी ले न, कहते हैं। अपने आप शरीर अच्छा हो जाएगा। भले ही, खाँसी है लेकिन तेरा शरीर तो अच्छा हो ही जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अंदर के सभी रोग खत्म हो जाएँगे, संसार रोग खत्म हो जाएगा।

दादाश्री : खत्म हो जाएगा। पूरे संसार के सार के रूप में लिखा है सब। यह ऐसा है न, कि बच्चों के हाथ में मैंने रत्न दे दिया है। किसी समझदार के हाथ में गया हो न, तो यह देखकर कूदेगा। कूदते-कूदते पढ़ेगा कि मेरे धन्य भाग!

ये नौ कलमें क्या है? शास्त्र में नहीं है ये। हम जिनका पालन करते हैं, वह भी हमेशा ही हमारे अमल में ही हैं, वह आपको करने के लिए दे रहे हैं, शक्ति माँगने के लिए। इस अनुसार हमारा वर्तन होता है। हाँ, ये नौ कलमें, इससे पहले हम इनमें निरंतर बरतते थे। उसके बाद ज्ञान हुआ मुझे और बाद में अपने महात्माओं ने कहा, 'आपका कुछ दीजिए न!' तब मैंने कहा, 'मैं इनमें बरतता था, तभी मुझ में यह ज्ञान प्रकट हुआ।' उसके बाद यह बात निकली है।

(सूत्र-14)

यह सत्संग पॉज़िटिव जैसा है और यह कुसंग नेगेटिव है। कुसंग दुःख भेजता है और सत्संग सुख देता है और यहाँ का यह सत्संग तो मोक्ष देता है! सत्संग अर्थात् सत् का योग होना, अच्छी चीज़ों का, पॉज़िटिव चीज़ का योग होना, वह। और नेगेटिव चीज़ का संयोग होना दुःखदाई है।

पूरा संसार कुसंग स्वरूप है और फिर कलियुग का प्रभाव! सत्संग से कुसंग के परमाणु निकल जाते हैं और नए शुद्ध परमाणु प्रवेश होते हैं।

जिस तरह यह पॉज़िटिव-नेगेटिव होता है न, वैसा ही है यह। सत्संग पॉज़िटिव जैसा है और वह कुसंग नेगेटिव है। नेगेटिव मात्र दुःखदाई है। यानी कुसंग आपके पास न आए तो आप समझ जाना कि आपको भौतिक सुखों की अड़चन, परेशानी नहीं आएगी। और यदि सत्संग का परिचय बढ़ गया और तेज़ी आ गई, तेज़ी अर्थात् आपको छूटना हो तो भी नहीं छूट सकते। ऐसी तेज़ी आएगी तो मोक्षफल मिलेगा। बाद में उसे कोई रोकने वाला है ही नहीं। तेज़ी आ गई, फिर सत्संग में से छूटना हो तो भी नहीं छूट सकते।

वैसे ही तेज़ी फिर कुसंग में भी आती है। फिर कुसंग में से छूटना हो तो भी नहीं छूट सकते। कुसंग में भी ऐसी तेज़ी आती है। यानी सत्संग अर्थात् सत्संग ही। इस जगत् के सुख का कारण सत्संग ही है।

सत्संग यानी लोग इकट्ठे होकर सत्संग करें, उसे सत्संग नहीं कहते हैं। सत्संग यानी हमें सत् का योग होना, संयोग होना, अच्छी चीज़ों का, पॉज़िटिव चीज़ का। नेगेटिव चीज़ का संयोग होना दुःखदाई है।

सत्संग में आने से प्रकाश होता है, जलन बंद कर देता है और कुसंग जलन खड़ी करता है। पटाखे (हवाई का बारूद) हवा में उछालें, तब धोती जलती है और जला देती है, वैसा ही इस कुसंग का है। इसलिए कुसंग को प्रत्यक्ष अग्नि समझना।

कुसंग से पाप घुसता है और फिर वह पाप काटता है। इतना परहेज़ रखना है। परहेज़ रखें तो रोग फिर से उत्पन्न नहीं होता। होटल में खाना, वे खराब परमाणु हैं, वह भी कुसंग है। इस जगत् में कुछ भी जानबूझकर नहीं कटता है, अनजाने में कट जाता है। इसलिए सचेत रहना।

यदि फुरसत में हो और कोई कुसंग मिल जाए तो फिर कुसंग से निंदा में पड़ता है और निंदा के दाग़ पड़ जाते हैं। ये सारे दुःख हैं, वे उसी के हैं। हमें किसी के बारे में बोलने का क्या अधिकार है? हमें अपना देखना है।

यदि हींग का पुट किसी पतीले में लग जाए तो छः महीने के बाद भी उस पतीले में खीर पकाएँ तो वह बिगड़ जाती है। यदि हींग के पुट का असर छः महीने तक रहता हो तो यदि कुसंग का पुट चढ़े, तब तो आपके अनंत काल बिगाड़ दे, ऐसा है। इसी तरह सत्संग का पुट भी उतना ही रहता है, लेकिन सत्संग ज़्यादा समय तक मिलना चाहिए। 'ज्ञानी पुरुष' के संग से ज्ञानी का 'पुट' चढ़ जाता है।

भगवान ने कहा था कि, ''जब तक 'ज्ञानी पुरुष' नहीं मिलते, तब तक तू जिस तालाब में पड़ा हो उसी तालाब में पड़ा रहना, अन्य किसी तालाब में जाना ही मत। अन्य किसी तालाब में तैरने जाएगा तो कीचड़ में घुसता जाएगा, और वापस उस तालाब के कीचड़ के दाग़ लगेंगे।

ज्ञानी मिलें तो उस तालाब में से जल्दी से बाहर निकल जाना। 'ज्ञानी पुरुष' मिल जाएँ तो सभी तालाबों का तू मालिक बन जाएगा और तेरा काम बन जाएगा। वे तुझे तालाब में से तार लेंगे।''

'वीतराग' भगवान कितने पक्के होंगे कि समझकर मुक्त हो गए। जिनसे धूप का दुःख सहन नहीं होता, वे कीचड़ में पड़े हुए हैं। भगवान तो कहते हैं कि, 'यहाँ गर्मी में तपे तो भी अच्छा, कीचड़ में जा गिरा तब तो हो चुका!' तपा हुआ तो फिर कभी न कभी ठंडा होगा, लेकिन कीचड़ वाला कब छूटेगा? एक बार कीचड़ में गिरा फिर तो कषायों का संग्रहस्थान खड़ा हो ही जाता है, लेकिन अगर धूप में तपे तो कषाय तो हल्के पड़ेंगे! यह तो, अगर किसी कीचड़ में पड़े हुए की संगत हो जाए, तब उससे तो अगर अपने कषाय कम हों, फिर भी सामने वाले के कषाय अपने में आ जाते हैं। एक बार कीचड़ में गिरो तो फिर बहुत भारी प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए कि, 'अब फिर से नहीं गिरूँ।'

सत्संग निरंतर मारता रहे वह अच्छा, लेकिन कुसंग रोज़ाना दाल-चावल-लड्डू खिलाए तो भी काम का नहीं। एक ही घंटा कुसंग मिले तो कितने ही काल के सत्संग को जला देता है। इन जंगल के पेड़ों को बड़ा करने में पच्चीस साल लगते हैं, लेकिन उन्हें जलाने में कितनी देर लगती है? 'ज्ञानी पुरुष' तो कितना कर सकते हैं? रोज़ जतन करके जंगल में पौधे उगाते हैं और जतन करके बड़े करते हैं। उन्हें फिर सत्संग रूपी पानी पिलाते हैं। लेकिन कुसंग रूपी अग्नि को उन पौधों को जलाने में कितनी देर? सब से बड़ा पुण्य तो कुसंग नहीं मिले, वह है।

कुसंग है, इसीलिए यह ज्ञान मैंने आपको दो घंटे में दिया है, उसे यह कुसंग खा जाएगा। कुसंग खा नहीं जाएगा? तो उसके लिए पाँच आज्ञाओं के प्रोटेक्शन की बाड़ दी है कि इससे प्रोटेक्शन करते रहोगे तो अंदर की दशा में ज़रा सा भी बदलाव नहीं होगा। और ज्ञान, जिस स्थिति में दिया था, उसी स्थिति में रहेगा। इसलिए आपको ये आज्ञाएँ पालन करने के लिए दी हैं। उतना भाग आपके पास रखा है। यों अकेले रहो तो हर बार तो प्रोटेक्शन रहेगा नहीं न! वह समूह, पूरा गाँव ही यदि सत्संग का हो तो प्रोटेक्शन रह सकेगा।

(सूत्र-15)

ये महात्मा तो जीते-जागते देव हैं। महात्मा-महात्मा में नेगेटिव बातें हो जाएँ, तो उसे याद करके आपको माफी माँग लेनी है।

प्रश्नकर्ता : हम यह जो सत्संग करते हैं, वह पुण्य के विभाग में जाता है या शुद्ध कर्म के विभाग में जाता है?

दादाश्री : वह तो ऐसा है न, कि ये जो (ज्ञान प्राप्त किए हुए महात्मा) शुद्ध हो चुके हैं, अहंकार से विमुक्त हो चुके हैं, उनमें शुद्ध के विभाग में ही जाता है। और जिनमें ऐसा अहंकार है, 'यह मैं हूँ', तब तक यदि इसका फल चाहिए तो सिर्फ पुण्य मिलेगा। और यदि इस अनुसार बरते तो मुक्ति भी प्राप्त कर लेगा। बाकी, फल के रूप में तो बहुत बड़ा पुण्य बंधता है। यथार्थ आत्मा की बात सुनना और उस पर थोड़ी-बहुत श्रद्धा बैठ जाना, वह क्या कोई ऐसी-वैसी बात है!

हम यहाँ पर सत्संग करते हैं न, ये जो बातचीत होती है न, उस समय देवी-देवता सुनने आते हैं! ऐसी बातें तो दुनिया में कभी हुई ही

नहीं। ये किसकी बातें चलती हैं? यहाँ पर किंचित्मात्र भी संसार की बातें नहीं हैं, इन बातों में संसार का भाग बिल्कुल भी नहीं है, एक सेन्ट भी। जब ये सत्संग होते हैं और घर-घर में सबको भोजन करवाते हैं, उस दिन कितना आनंद होता है?

प्रश्नकर्ता : बहुत अच्छा, ज़बरदस्त।

दादाश्री : इसी तरह इन्हें कितना आनंद हुआ होगा! प्रतिदिन जलेबी बनाना और फलाँना बनाना, बार-बार ऐसा मौका नहीं मिलता!

क्योंकि अन्य कहीं पर जाग्रत देव दिखाई नहीं देते। जीते-जागते देव इतने ही हैं कि जिन्हें अब मेरा-तेरा कुछ भी नहीं रहा।

ये महात्मा बिल्कुल सच्चे हैं, उसकी गारन्टी देता हूँ। भले कैसे भी हों, पैसे कम होंगे, फिर भी उनकी नीयत साफ, भावना भी बहुत सुंदर है। प्रकृति तो अलग-अलग होती ही हैं। ये महात्मा तो जीते-जागते देव हैं। आत्मा भीतर प्रकट हो चुका है। एक क्षण भी आत्मा को भूलते नहीं। फिर से ऐसा चान्स (मौका) नहीं मिलेगा। और उसमें भी यदि कभी आप्तपुत्रों का हो जाए तो ओर अच्छा। क्योंकि उन्हें किसी से कुछ लेना-देना नहीं है। अत: इन महात्माओं की सेवा हो सके, वह बहुत उत्तम कहा जाएगा।

ये महात्मा क्या हैं, ऐसा यदि मेरे शब्द से समझो न, तो वे भगवान जैसे हैं, लेकिन इन महात्माओं को पता नहीं। उन्हें चाय-पानी पिलाएँगे, खिलाएँगे, भोजन करवाएँगे, वह सब से बड़ा यज्ञ कहलाता है। प्रथम कोटि का यज्ञ। चूड़ियाँ बेचकर भोजन करवाएँगे न तो भी बहुत अच्छा! चूड़ियाँ शांति नहीं देंगी। महात्माओं के साथ बैठें, (उनकी) नीयत गलत नहीं होती। इसलिए इन महात्माओं को तो जितना खिलाया जाए उतना खिलाते रहना। चाय पिलाओगे तो भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : दादा, महात्माओं को भोजन करवाने की भावना तो मुझ में शुरू से है, पर आज आपने बहुत अच्छा खुलासा किया कि 'जीवित देव हैं।'

दादाश्री : जीवित देव, सच्चे देव। जिन्हें कुछ नहीं चाहिए, वे सभी देव कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में, भूतकाल में किसी भी महात्मा के प्रति जो दोष हुए हों या द्वेष-भेदभाव रखा हो...

दादाश्री : नहीं-नहीं। अपने यहाँ तो नियम है न, कि जो बैर-भेदभाव रखता है, वह महात्मा ही नहीं है। देखने में चाहे ऐसा दिखाई देता है, फिर भी बैर-भेदभाव की नजर से तो देखना ही नहीं चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अब हमें सबकुछ महात्माओं के लिए ही करना है और अब तो किफायत नहीं करेंगे, आपने 'जीवित देव' कहा है महात्माओं को। लेकिन कभी हमसे महात्माओं की कोई नेगेटिव बातें हो जाती हैं तो हम उन सब के लिए माफी माँग लेते हैं।

दादाश्री : उसके लिए तो याद करके माफी माँग लेनी चाहिए। जब तक पत्र पोस्ट नहीं किया हो, तब तक उसमें सुधार संभव है। जब तक इसी जन्म में हैं तब तक सब साफ किया जा सकता है। जन्म बदलने के बाद कुछ (बदलाव) नहीं हो सकेगा।

अपने लिए एक ही चीज़ है 'पॉज़िटिव' देखना। दुनिया 'पॉज़िटिव' और 'नेगेटिव' के रास्ते पर हैं। कभी न कभी तो वे 'नेगेटिव' का पॉज़िटिव

करेंगे। तो हम शुरु से ही 'पॉज़िटिव' क्यों नहीं रहें? 'हम' 'नेगेटिव' को 'पॉज़िटिव' से जीतते हैं।

(सूत्र-16)

ज्ञानी किस तरह सहीसलामत और आनंद में रहते होंगे? क्योंकि ज्ञानी जगत् को जानकर बैठे हुए हैं कि 'कुछ भी होने वाला नहीं है, कोई नाम देने वाला नहीं है। मैं ही हूँ सब में, मैं ही हूँ, मैं ही हूँ, दूसरा कोई है ही नहीं!'

बहुत समझने जैसा जगत् है। लोग समझते हैं वैसा यह नहीं है। शास्त्रों में लिखा है, वैसा यह जगत् नहीं है। शास्त्रों में तो पारिभाषिक भाषा में है, वह सामान्य व्यक्तियों को समझ में आ सके, ऐसा नहीं है।

किंचित्मात्र आपको कोई कुछ कर सके, ऐसा है ही नहीं, यदि आप किसी को परेशान नहीं करो तो। उसकी मैं आपको गारन्टी लिख देता हूँ। यहाँ निरे साँप पड़े हों, फिर भी कोई आपको छुएगा नहीं, ऐसा गारन्टी वाला जगत् है।

आपका दख़लंदाज़ी करना बंद हो जाए तो आपमें दख़लंदाज़ी करने वाला दुनिया में कोई नहीं है। आपकी दख़लंदाज़ी के ही परिणाम हैं ये सब! जिस समय आपकी दख़लंदाज़ी बंद हो जाएगी, तब आपका कोई परिणाम आपके पास नहीं आएगा। आप पूरी दुनिया के, पूरे ब्रह्मांड के स्वामी हो। कोई *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) ही नहीं है आपका। आप परमात्मा ही हो, कोई आपको पूछने वाला नहीं है।

ये सब अपने खुद के ही परिणाम हैं। आप आज से किसी को स्पंदन फेंकने का, किंचित्मात्र किसी के लिए विचार करना बंद कर दो। विचार आए तो प्रतिक्रमण करके धो डालना, ताकि पूरा दिन किसी के भी प्रति स्पंदन बिना का बीते! इस प्रकार से दिन बीते तो बहुत हो गया, वही पुरुषार्थ है।

कह रहा हूँ न, हमें ट्वेन्टी सेवन यर्स (सत्ताइस सालों) से टेन्शन नहीं हुआ है बोलो, सिन्स ट्वेन्टी सेवन यर्स! आप इस दशा की भक्ति करते हो, तो आप भी ऐसे बन जाओगे। जिसको भजते हैं उसको पूर्ण रूप से प्राप्त करते हैं। जिसका निदिध्यासन करते हैं, उस रूप हो जाते हैं।

ज्ञानी किस तरह सहीसलामत और आनंद में रहते होंगे? क्योंकि ज्ञानी जगत् को जानकर बैठे हुए हैं कि 'कुछ भी होने वाला नहीं है, कोई नाम देने वाला नहीं है। मैं ही हूँ सब में, मैं ही हूँ, मैं ही हूँ, दूसरा कोई है ही नहीं!'

(सूत्र-17)

गलत समझ दूर हो जाए और सही समझ प्राप्त हो, वही आनंद है। कषायों का अभाव, वही आनंद है।

यानी 'ये सब किस तरह से एक हो जाएँ? गुत्थियाँ किस तरह से सुलझें?' ऐसी सब बहुत सारी चीज़ें जानता हो, तो उसे 'वेल्डिंग' करने वाला कहा जाता है।

प्रश्नकर्ता : आपकी जो 'वेल्डिंग' है, वह सूक्ष्म लेवल की होती है, लोगों की स्थूल में होती है।

दादाश्री : हाँ, ऐसे स्थूल वाले भी बहुत होते हैं।

प्रश्नकर्ता : आपका यह गुण मुझे बहुत पसंद आया। आप किस प्रकार से सभी को समझाकर 'वेल्डिंग' करते हैं और अंत में सभी आनंद में आ जाते हैं, ऐसा कर देते हैं।

दादाश्री : और सभी आनंद में आ जाते हैं तो उसका फिर मुझे आनंद-आनंद रहता है। कभी किसी का मुँह चढ़ा हुआ हो तो मैं उससे पहले पूछता हूँ कि, 'क्या है? ऐसा है, वैसा है? किस दुःख के कारण मुँह चढ़ा रहा है? मरना तो है ही, तो जीते जी क्यों आनंद में न रहें? अगर मरना ही है, तो उस दिन देख लेंगे लेकिन अभी तो आनंद में रहना है।'

ये तो साल-दो साल दुःख में नहीं होते और बाद में फिर वापस दुःख ही दुःख में। यह शरीर ही ऐसा है *पुद्गल* का कि दुःख रहता ही है। सिर में दर्द हो तब देह का दुःख नहीं होता? तब यदि देह का दुःख होता है तो पति का नहीं होगा? लेकिन फिर भी 'वेल्डिंग' हो जाने के बाद दोनों एक हो जाते हैं, तब असली मज़ा आता है!

(सूत्र-18)

इन सभी के चेहरे पर मैं आनंद देखता हूँ, वह इस 'व्यवस्थित' के ज्ञान की वजह से। 'व्यवस्थित' का ज्ञान हमें भय में नहीं रखता, सभी भय खत्म हो जाते हैं।

अभी यदि कोई व्यक्ति आकर ऐसा कहे न, कि 'इन सभी के चेहरों पर मैं आनंद देख रहा हूँ', तो वह इस 'व्यवस्थित' के ज्ञान की वजह से है।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : क्योंकि चाहे कुछ भी हुआ हो तो भी 'व्यवस्थित' कहकर आप तुरंत वापस मुड़ जाते हो न! उससे फिर विचार खत्म हो जाते हैं न! भय वगैरह सबकुछ चला जाता है। वर्ना, यदि 'व्यवस्थित' नहीं होता तो भय लगता। यह देख लेगा, वैसा हो जाएगा, फलाना हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : विकल्प होते रहते हैं।

दादाश्री : विकल्प होते ही रहते हैं। फिर वे सारे विकल्प चढ़ बैठते हैं। (क्रमिक मार्ग में) निर्विकल्प होने के बाद भी चढ़ बैठते हैं।

यदि 'खुद' अकर्ता रहे तो 'व्यवस्थित' कर्ता है, ऐसा समझ में आएगा तभी जगत् 'जैसा है वैसा' समझ में आएगा। जब तक 'व्यवस्थित' समझ में नहीं आएगा, तब तक संकल्प और विकल्प नहीं जाएँगे, भय नहीं जाएगा, क्रोध-मान-माया और लोभ नहीं जाएँगे।

अतः इस संसार में किसी भी प्रकार का भय रखने जैसा नहीं है। इट हैपन्स है, उसमें क्या भय रखने जैसा है? और जहाँ इट हैपन्स है वहाँ तो यह एलिवेट होने की भी क्या ज़रूरत है और डिप्रेशन में आने की भी क्या ज़रूरत है?

जो कुछ भी हो रहा है, वह खुद के कर्म के उदय में होगा तभी हो रहा है, तभी 'व्यवस्थित' के नियम में आ सकता है, वर्ना 'व्यवस्थित' के नियम में नहीं आ पाएगा। अतः कुछ भी भय रखने जैसा नहीं है संसार में। जो होगा वह 'व्यवस्थित' है। उसमें कुछ भी हर्ज नहीं है और वह अपना स्वरूप नहीं है, *पुद्गल* है। वे *पुद्गल* की अवस्थाएँ हैं। वे आत्मा की अवस्थाएँ नहीं हैं। हम तो आत्मा होकर बैठे हैं। अब, हमें कुछ भी स्पर्श नहीं कर सकता। सिर्फ बात को ही समझना है। 'व्यवस्थित' का ज्ञान हमें भय में नहीं रखता, सारे भय खत्म हो जाते हैं। यदि व्यवस्थित समझ जाए तो बहुत आनंद आ जाएगा।

(सूत्र-19)

अक्रम विज्ञान यानी क्या कि नेगेटिव पॉलिसी ही नहीं कि 'आप क्यों चोरियाँ करते

हो और आप क्यों झूठ बोलते हो? क्यों खराब व्यवहार करते हो?' ऐसी-वैसी नेगेटिव पॉलिसी ही नहीं है।

हमने तो क्या कहा है कि तू झूठ बोलना ही मत और यदि तुझे झूठ बोलना ही हो तो नियम से बोलना कि आज मुझे पाँच ही झूठ बोलने हैं, छठ्ठी बार नहीं, तो मोक्ष में जाएगा। फिर जब वह पाँच झूठ बोल चुका होगा उसके बाद यदि उसकी बहन ने कोई चारित्रसंबंधी दोष किया हो, और तब कोई पूछे कि, 'भाई, आपकी बहन के बारे में यह बात सच है?' तब उस व्यक्ति के ये पाँच झूठ तो हो चुके, अब छट्ठा झूठ तो बोला नहीं जा सकता, इसलिए उसे 'सच है', ऐसा कहना ही पड़ेगा। यदि पाँच मौके खत्म नहीं हुए होते तो पाँचवा यहाँ पर काम में ले सकता था, लेकिन पाँच झूठ बोलने के मौके पूरे हो गए! इसे 'नियम से अनीति' कहा है।

कोई चोर चोरी करता है, लेकिन यदि नियम से चोरी करे तो वह नियम उसे मोक्ष में ले जाएगा। नियम से चोरी करना यानी क्या? कि उसे महीने में दो चोरियाँ करने को कहा है। अब पहली बार हाथ मारा तो उसे दस रुपये हाथ में आए, फिर से हाथ मारा तो चालीस रुपये मिले। यानी चालीस और दस, इस तरह महीने में पचास रुपये मिले। अब यदि पहला हाथ नहीं मारा होता तो उसे दूसरे तीन सौ मिल सकते थे, लेकिन दो बार हो चुका इसलिए अब नहीं लिए जा सकते। उसने किसी की जेब में हाथ डालकर देख लिया कि ये तो तीन सौ रुपये हैं, लेकिन तुरंत उसे हुआ कि यह तो गलत किया, मुझसे दो बार तो चोरी हो चुकी है, तो वह छोड़ देता है। इसे 'नियम से अनीति' कहते हैं।

मूलत: वास्तव में मैं क्या कहना चाहता हूँ अगर उसे समझे न तो कल्याण हो जाए। हर एक वाक्य में मैं क्या कहना चाहता हूँ, वह पूरी बात ही यदि समझ में आ जाए तो कल्याण हो जाए। लेकिन यदि वह उस बात को अपनी भाषा में ले जाए तो क्या हो सकता है? हर एक की भाषा स्वतंत्र ही होती है, वह खुद की भाषा में ले जाकर फिट कर देगा, लेकिन यह उसकी समझ में नहीं आता कि 'नियम से अनीति कर!'

प्रश्नकर्ता : दादा, मैंने भी जब पहली बार यह पढ़ा तब मैं एकदम से सोच में पड़ गया, कि यह क्या? दादा क्या कहना चाहते हैं! फिर मुझे लगा कि यह तो बहुत ग़ज़ब का वाक्य है!

दादाश्री : हाँ, अक्रम विज्ञान यानी क्या कि नेगेटिव पॉलिसी ही नहीं कि 'आप क्यों चोरियाँ करते हो और आप क्यों झूठ बोलते हो? क्यों खराब व्यवहार करते हो?' ऐसी-वैसी नेगेटिव पॉलिसी ही नहीं है।

(सूत्र-20)

हमें जीवन में एक प्रिन्सिपल (सिद्धांत) रखना है। हमेशा पॉज़िटिव रहना है, नेगेटिव के पक्ष में कभी भी नहीं बैठना है। सामने से नेगेटिव आए वहाँ पर मौन हो जाना है।

कई साल गुज़र गए, किंतु मेरा मन ज़रा सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। किसी भी संयोग में ज़रा सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। यदि लोगों का मन पॉज़िटिव हो जाए तो वे भगवान ही हो जाएँ! इसलिए मैं लोगों से कहता हूँ कि इस नेगेटिवपना (नकारात्मकता) को छोड़ते जाइए, समभाव से निपटारा करके। फिर पॉज़िटिव तो अपने आप रहेगा। व्यवहार में पॉज़िटिव और निश्चय में पॉज़िटिव भी नहीं और नेगेटिव भी नहीं।

पूरा संसार 'नेगेटिव' में भटक-भटककर मर गया। यह 'अक्रम' तो बहुत अच्छा 'पॉज़िटिव' मार्ग है। पॉज़िटिव यानी क्या? कुछ छोड़ना नहीं है, कुछ हटाना नहीं है, केवल लाना है। मैं तो पॉज़िटिव करना चाहता हूँ। नेगेटिव सेन्स लाना ही नहीं चाहता। यदि वह अच्छा हो न, तो उसे अच्छे में पुष्टि दे देता हूँ। यानी अच्छा इतना अधिक प्रकाशमान हो जाए, इतनी अधिक जगह रोकता जाए कि नेगेटिव खत्म ही हो जाए। इस जगत् में अभी तक नेगेटिव ही टकराव होता रहा है!

पॉज़िटिव ले, उसमें तो कोई हर्ज ही नहीं है। पॉज़िटिव लीजिए। मेरा सब पॉज़िटिव ही होता है न! हम सारा दिन बोलते रहते हैं, फिर चाहे कितनी भी टेप (वाणी) निकले, लेकिन सब पॉज़िटिव। कुछ भी नेगेटिव नहीं। नेगेटिव विचार नहीं, नेगेटिव वर्तन नहीं।

हमारा सिद्धांत क्या है? पॉज़िटिव। नेगेटिव नहीं। कोई तलवार लेकर आए तब यदि अपने हाथ में तलवार हो तो नीचे रख देनी है। अपना तो पॉज़िटिव। कतलखाना तो है लेकिन यह अहिंसक कतलखाना है! जीवहिंसा नहीं होती। सभी भ्रष्टाचारी गुण कतल हो जाते हैं और सदाचारी गुण उत्पन्न होते हैं। बाहर के सभी गुण बदल जाते हैं।

मूल भगवान महावीर के समय से चला आया है कि पॉज़िटिव वाले मोक्ष में चले जाते हैं और नेगेटिव वाले बिल्कुल गलत रास्ते पर चले जाते हैं। अत: हमें जीवन में एक प्रिन्सिपल (सिद्धांत) रखना चाहिए। हमेशा पॉज़िटिव रहना, नेगेटिव के पक्ष में कभी भी नहीं बैठना। यदि सामने से नेगेटिव आए तो वहाँ पर मौन हो जाना है।

(सूत्र-21)

मैं किसी की भी 'बुद्धि' नहीं देखता, मैं तो 'समझ' देखता हूँ। हमारी सभी कलाएँ उच्च प्रकार की होती हैं, यदि सीख लें तो। यदि बात पसंद आई हो तो शुरूआत कर देना। हमेशा के लिए सेफसाइड हो जाएगी।

महात्माओं में वर्तन ढूँढने जाएँगे तो कुछ नहीं हो पाएगा। वर्तन तो ऐसा है कि कितने ही समय बाद हाथ में आए ऐसा है। और यह काल ऐसा नहीं है। यह स्लिपिंग काल है, यह फिसलन वाला काल है। इसमें अपना अब कुछ नहीं हो सकता। इसके बजाय तो छोड़ दे न! वर्तन को एक तरफ रखकर, मनोशुद्धि होने दो। आत्मा शुद्ध हो गया है। पहले मन की शुद्धि ही होती रहती है, निरंतर। आत्मा शुद्ध हो गया इसलिए मन में जितना डिस्चार्ज होता है उसे देखते रहेंगे उतना ही मन शुद्ध होता जाएगा।

अपने महात्माओं में, पहले मन शुद्ध होता है, उसके बाद वाणी शुद्ध होती है। जब वाणी शुद्ध हो जाती है तब वर्तन शुद्ध होता है। लेकिन पहले मन शुद्ध हो जाना चाहिए। जितने अंशों तक मन शुद्ध होगा उतने ही अंशों तक वाणी शुद्ध होगी। जितने अंशों तक वाणी शुद्ध होगी उतने ही अंशों तक वर्तन शुद्ध होगा। वर्तन सब से अंत में होता है। वर्तन की बहुत कीमत नहीं है। भगवान ने वर्तन की बहुत कीमत नहीं मानी है। दुनिया ने वर्तन की कीमत मानी है। वर्तन तो, घी बनाने के बाद, गरम करने के बाद आता है! यदि जमा हुआ घी होगा तो वह बहेगा नहीं, तब ऐसा नहीं कह सकते कि वर्तन में नहीं आया है। उसे गरम करेंगे तो वापस वैसा हो जाएगा। अक्रम विज्ञानी का कहना यही है कि, 'पूरी दुनिया

जो मानती है, उससे ये कुछ अलग करते हैं'। पूरी ही दुनिया इसे मानती है, वर्तन को। तेरे मन में चाहे कुछ भी है लेकिन वर्तन में तो बहुत अच्छा है और अक्रम ज्ञानी उसके लिए मना करते हैं कि, 'भाई जोखिम तो इसमें है। तेरा वर्तन चाहे कितना भी अच्छा हो लेकिन अगर तेरा मन बिगड़ा हुआ है तो वह अगले जन्म का हिसाब है और इस वर्तन का फल तो आपको इस जन्म में यश (कीर्ति) मिल जाएगा लेकिन अगला जन्म तो बिगड़ गया न?' जबकि इस दुनिया को अगले जन्म की नहीं पड़ी है। अभी अच्छा-अच्छा दिखाई देना है। क्योंकि सम्यक् दृष्टि नहीं है उन्हें, उन्हें मिथ्या दृष्टि है।

जहाँ पर भेद बुद्धि है, वहाँ मतभेद अवश्य होंगे ही। यदि अभेद बुद्धि उत्पन्न हो जाए, तो समझो बात बन गई। खुद निष्पक्षपाती होकर सेन्टर में बैठकर सबको निर्दोष देखे। बुद्धि उल्टा दिखाए, तो तुरंत ही सम्यक् बुद्धि से हम कह दें कि जाओ *निकाल* करके आओ, तो वह *निकाल* कर आती है। जब आत्मा भ्रमित हुआ, तो संसार खड़ा हो गया। जब बुद्धि भ्रमित होगी, तब ज्ञान प्रकट होगा।

मैं किसी की भी 'बुद्धि' नहीं देखता हूँ, मैं तो 'समझ' देखता हूँ। बुद्धि तो एक लाइन में तीन सौ जगह पर टेढ़ी होती है, लेकिन समझ सीधी रही, तो हर्ज नहीं है। बुद्धि वाला तो बुद्धि में ऊपर उठता है और फिर नीचे भी आ गिरता है। जबकि 'समझ' वाला, दर्शन वाला ऊँचे ही ऊँचे, अंत तक पहुँच जाएगा।

मेरी बात आप पर ज़बरदस्ती उँडेलनी नहीं है। आपको खुद को ही समझ में आना चाहिए। मेरी समझ मेरे पास है, ज़बरदस्ती उंडेलने से तो कोई काम नहीं होता। आपको वह समझ में आ जाए फिर आप उस 'समझ' से चलोगे। ज्ञान में कुछ भी 'करने' की ज़रूरत नहीं है। समझने की ज़रूरत है। ज्ञान में और समझ में कुछ फर्क होता होगा क्या? मेरे पास से आप बात को समझ लो। वह समझ धीरे-धीरे ज्ञान के रूप में परिणमित होगी। ज्ञान जानते ज़रूर हैं, परंतु वर्तन में नहीं आता, उसे 'समझ' कहते हैं।

समझ हो फिर भी वर्तन में नहीं आए तब तक उसे दर्शन कहा जाता है, और वर्तन में आए उसे ज्ञान कहा है।

हमें तो, जो गिर चुके हैं उन्हें खड़ा करना है। 'क्यों गिर गया?' ऐसा नहीं पूछना है। हम खड़े करने आए हैं। इतना पूछना है कि तुझे कहाँ लगा? भाई क्या हुआ? कैसे गिर गया? क्यों गिरा? ऐसी मूर्खता क्यों की? एक तो लगा इतना सारा और मलहम पट्टी करने के बजाय, यह कर रहे हो? चाहे कैसा भी गुनाह करके आया हो, लगा इसलिए उसकी मलहम पट्टी करो।

अब आपके पास ज्ञान है इसलिए सामने वाले से काम लेना सीखो, पुराना तरीका अब बदल दो। पहले तो ऐसा होना चाहिए कि अभी तक का पुराना तरीका गलत था। उसके बाद सब्स्टिटूट (प्रतिस्थानिक) मिलेगा। अब सब्स्टिटूट ढूँढो। घर में इस तरह आनंद से रहो, सामने वाले से भूल हो गई हो तब भी उसके साथ भी आनंद से रहो। सभी को आनंद में रखो। भूल वालों को भी आनंद में रखने के बाद उनसे काम ऐसा लेना चाहिए। रोज़ मेरे साथ बैठते हो, कुछ न कुछ सीखने को तो मिलता ही है न! हमारी सभी कलाएँ उच्च प्रकार की होती हैं, यदि सीख लें तो। यदि बात पसंद आई हो तो शुरूआत कर देना। हमेशा के लिए सेफसाइड हो जाएगी।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी के आजीवन सदस्यों तथा विदेशो में रहने वाले सभी सदस्यों के लिए

सभी आजीवन सदस्यों के लिए

दादावाणी मैगेज़ीन पिछले 27 सालों से नियमित रूप से आजीवन सदस्यों के लिए पोस्ट होती है। वर्तमान परिस्थिति की बात करे तो पेपर, प्रिन्टींग तथा पोस्टींग में होने वाली लगातार भाव वृद्धि के कारण पिछले बहुत सालों से मैगेज़ीन नुकसान में चल रही है। इसके फल स्वरूप अब आजीवन सदस्यों के लिए मैगेज़ीन पहुँचाना बहुत ही मुश्किल हो गया है। अत: जो आजीवन सदस्य हैं, उन्हें मैगेज़ीन चाहिए तो वर्तमान भाव के अनुसार फिर से सदस्यता शुल्क भरना पड़ेगा। फरवरी 2023 से आजीवन सदस्यों के लिए मैगेज़ीन की पोस्टींग बंद हो जाएगी।

यदि आपको फ्री में मैगेज़ीन चाहिए तो डिजिटल फोरमेट में satsang.dadabhagwan.org या Akonnect से डाउनलोड कर सकते हैं।

विदेशो में (भारत के अलावा) रहने वाले सदस्यों के लिए

विदेशों में (भारत के अलावा) रहने वाले सदस्यों के लिए यह बताना आवश्यक है कि वहाँ मैगेज़ीन भेजने का पोस्टींग चार्ज बहुत बढ़ गया है। उसके फल स्वरूप मैगेज़ीन के बजाय पोस्टींग की कीमत बहुत ज़्यादा हो रही है। अत: आजीवन सदस्यों के अलावा 15 या 5 साल के सदस्यों के लिए भी फरवरी 2023 से मैगेज़ीन पोस्ट होनी बंद हो जाएगी। आपको मिलने वाले रिफंड के बारे में (Akonnect / E-mail पर) जानकारी दी जाएगी। विदेशो में रहने वाले, जिन महात्माओं ने पिछले एक साल के दौरान वार्षिक सदस्यता शुल्क भरा है, उनको साल के अंत तक मैगेज़ीन मिलती रहेगी।

भारत के 15 / 5 / 1 साल के सदस्यों के लिए

भारत के 15 या 5 साल के सदस्यों के लिए उनकी सदस्यता शुल्क की सीमा पूर्ण होने तक मैगेज़ीन मिलती रहेगी। उसी तरह वार्षिक सदस्यों के लिए भी मैगेज़ीन मिलनी जारी रहेगी।

नया सदस्यता शुल्क

अब से (सिर्फ भारत के लिए) वार्षिक सदस्यता शुल्क है ₹ 200 और 5 साल के लिए सदस्यता शुल्क है ₹ 1000। विदेशो के लिए सिर्फ डिजिटल फोरमेट में मैगेज़ीन उपलब्ध रहेगी।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरूमाँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

आंध्रप्रदेश - तेलंगाना - तमिलनाडु के महात्माओं के लिए

आप्तपुत्र भाइयों के साथ सत्संग रिट्रीट

दिनांक : 7 और 8 जनवरी 2023

स्थल : कुलपाक जी जैन तीर्थ, हैदराबाद. **संपर्क :** 9885058771, 9849167229

महाराष्ट्र

पुणे	**दिनांक : 7-8 जनवरी**	**संपर्क :** 8830627538
सातारा	**दिनांक : 9 जनवरी**	**संपर्क :** 7350998503
कराड़	**दिनांक : 10 जनवरी**	**संपर्क :** 7722051313
कोल्हापुर	**दिनांक : 11 जनवरी**	**संपर्क :** 9403787776
सांगली	**दिनांक : 12-13 जनवरी**	**संपर्क :** 9423870798

समय व स्थल के हेतु उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत

- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 6-30 (सिर्फ गुजरात राज्य में)
- **'इन्डिया न्यूज़ गुजरात'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 8
- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में - केवल उड़ीसा राज्य में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर सोमवार से गुरुवार शाम 7-30 से 8 (कन्नड़ा में)

USA - Canada

- **'TV Asia'** पर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST

UK

- **'MA TV'** पर रोज़ शाम 5-30 से 6-30 GMT

Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

Fiji - NZ - Singapor - SA - UAE

- **'Rishtey'** पर हर रोज़ सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

अडालज

24 से 31 दिसम्बर - पारायण (आप्तवाणी-14 भाग-3)

सुबह 10 से 12-30, शाम 4-30 से 7 - **पारायण - वाचन तथा प्रश्नोत्तरी**

नोट : आप्तवाणी-14 भाग-3 गुजराती किताब के पेज नंबर 141 से वाचन होगा।

1 जनवरी सुबह 10 से 12-30 - **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**

2 जनवरी - परम पूज्य दादाश्री की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रम

सुबह 7 से 9 चरण विधि और किर्तन भक्ति **तथा** रात 8-30 से 10 स्पेशियल भक्ति और महात्माओं के अनुभव

मुंबई

13-14 जनवरी (शुक्र-शनि) शाम 6 से 9 - **सत्संग**

15 जनवरी (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

स्थल : रेल्वे पुलीस ग्राउन्ड़, वल्लभबाग एक्सटेन्शन रोड़ के पीछे, घाटकोपर (ई), मुंबई. **संपर्क :** 9323528901

सावरकुंड़ला

14 फरवरी (मंगण) शाम 7-30 से 10-30 - **सत्संग**

15 फरवरी (बुध) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

स्थल : वी.जे.पारेख आई होस्पिटल ग्राउन्ड़, हाथसणी रोड़, सावरकुंड़ला. **संपर्क :** 9426528802

राजकोट

17-18 फरवरी (शुक्र-शनि) शाम 7 से 10 - **सत्संग**

19 फरवरी (रवि) शाम 5-30 से 9 - **ज्ञानविधि**

20 फरवरी (सोम) रात 7 से 10 - **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : मवड़ी चोकड़ी, बापा सीताराम चोक, राजकोट. **संपर्क :** 9879137971

ध्रांगध्रा त्रिमंदिर प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में... दिनांक 24 से 26 फरवरी 2023

24 फरवरी (शुक्र) - **सत्संग** (स्थानिक महात्माओं और नए मुमुक्षुओं के लिए)

25 फरवरी (शनि) - **ज्ञानविधि**

26 फरवरी (रवि) - **प्राणप्रतिष्ठा** तथा **प्रक्षाल-पूजन-दर्शन-आरती**

स्थल : 'ध्रांगध्रा त्रिमंदिर', हणवद रोड़, अदालत के बाजु में, फन पोईन्ट होटल के पीछे, ध्रांगध्रा.

विशेष सूचना : प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम केवल एक दिन का है, इसलिए रात्रि आवास की सुविधा उपलब्ध नहीं हो पाएगी।

जो महात्मा-मुमुक्षु उसी दिन सीधे ही महोत्सव स्थल पर पहुँचेंगे, उनके लिए बाथरूम-टोइलेट की सुविधा स्थल पर रहेगी।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद (दादा दर्शन) :** 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल और भाजपा के महामुभाग जन्मजयंती महोत्सव की मुलाकात लेते हुए

दिसम्बर 2022
वर्ष-18 अंक-2
अखंड क्रमांक - 206

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

अक्रम से पॉजिटिव की राह पर

जगत् में 'पॉज़िटिव' ही सुख देगा और 'नेगेटिव' सब होगा, वह दुःख देगा। यानी नेगेटिव की कितनी बड़ी जोखिमदारी है! दो ही चीजें हैं : 'पॉज़िटिव' और 'नेगेटिव'। 'नेगेटिव' रखेंगे तो कुदरत किसे 'हेल्प' करेंगी? अपनी 'डिक्शनरी' में 'नेगेटिव' नहीं होना चाहिए। पूरा संसार 'नेगेटिव' में भटक-भटककर मर गया। यह 'अक्रम' तो बहुत अच्छा 'पॉज़िटिव' मार्ग है। पॉज़िटिव ले, उसमें तो कोई हर्ज़ ही नहीं है। पॉज़िटिव लीजिए, मेरा सब पॉज़िटिव ही होता है न! हम सारा दिन बोलते रहते हैं, फिर चाहे कितनी भी टेप (वाणी) निकले, लेकिन पॉज़िटिव! हम सारा दिन बोलते ही रहते हैं, लेकिन कुछ भी नेगेटिव नहीं। नेगेटिव विचार नहीं, नेगेटिव वाणी नहीं, नेगेटिव वर्तन नहीं।

– दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.